Sample

लाल–किताब कुण्डली

Ramesh Parbhakar

347/7 Red Rose Building

Shiv Mohalla Sangam Market

Ladwa, Kurukshtra- 136132

Contact - 9812560311, 9466960753

Sample DOB-18:12:1973 TOB-01:45:00 POB-Ballia (up)

लाल किताब चन्द्र कुण्डली

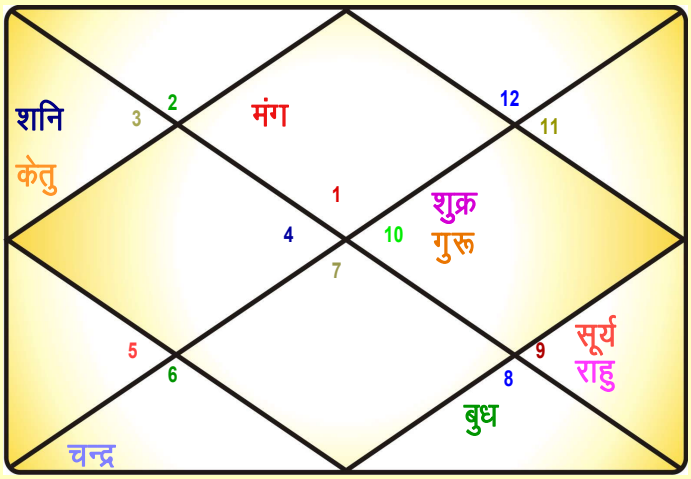

लग्न कुण्डली

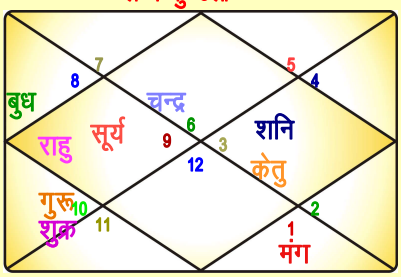

भाव चलित कुण्डली

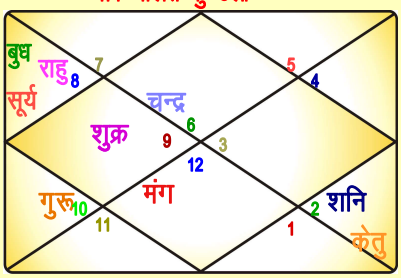

लाल किताब चन्द्र कुण्डली में ग्रहों की स्थिति

ग्रह	भावस्थ	भावेश	प्रभाव	पक्का घर	भा0 का ग्रह	साथी ग्रह	कायम	धर्मी	सोया	विशेष
सूर्य	नवम्	5	राशि						हाँ	शुभ भाव में
चन्द्रमा	षष्टम्	4	राशि						हाँ	अशुभ भाव में
मंगल (बद)	लग्न	1, 8	ग्रह		हाँ		हाँ		हाँ	शुभ भाव में
बुध	अष्टम्	3, 6	राशि						हाँ	अशुभ भाव में
गुरू	दशम्	9, 12	राशि						हाँ	अशुभ भाव में
शुक्र	दशम्	2, 7	राशि				हाँ		हाँ	
शनि	तृतीय	10, 11	राशि				हाँ			शुभ भाव में
राहु	नवम्		ग्रह						हाँ	अशुभ भाव में
केतु	तृतीय		ग्रह				हाँ			शुभ भाव में

लाल किताब चन्द्र कुण्डली में भावों (खानों की स्थिति)

खाना न॰	खाना न॰	मालिक	पक्का घर	सोया	उच्च	नीच	किस्मत को जगाने
१	मंगल	मंगल	सूर्य		सूर्य	शनि	मंगल
२		शुक्र	गुरू		चन्द्रमा		चन्द्रमा
३	शनि, केतु	बुध	मंगल		राहु	केतु	बुध
४		चन्द्रमा	चन्द्रमा	हाँ	गुरू	मंगल	चन्द्रमा
५		सूर्य	गुरू	हाँ			सूर्य
६	चन्द्रमा	बुध	बुध केतु		बुध राहु	शुक्र केतु	केतु
७		शुक्र	शुक्र बुध		शनि		शुक्र
८	बुध	मंगल	मंगल शनि			चन्द्रमा	चन्द्रमा
९	सूर्य, राहु	गुरू	गुरू		केतु	राहु	शनि
१०	गुरू, शुक्र	शनि	शनि		मंगल	गुरू	शनि
११		शनि	शनि				गुरू
१२		गुरू	गुरू		शुक्र केतु	बुध राहु	राहु

लाल किताब चन्द्र कुण्डली में ग्रहों की दृष्टि

लाल किताब की सामान्य दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	गु0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य									
चन्द्रमा									
मंगल									
बुध									
गुरू									
शुक्र									
शनि	अर्द्ध							अर्द्ध	
राहु									
केतु	अर्द्ध							अर्द्ध	

ग्रहों की दृष्टि

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य							0		0
चन्द्रमा									
मंगल									
बुध									
गुरू		0							
शुक्र									
शनि	0							0	
राहु			0				0		0
केतु	0							0	

लाल किताब में टक्कर की दृष्टि

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य									
चन्द्रमा			0						
मंगल				0					
बुध							0		0
गुरू									
शुक्र									
शनि					0	0			
राहु									
केतु					0	0			

लाल किताब में पाये की दृष्टि

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य									
चन्द्रमा									
मंगल	0							0	
बुध									
गुरू		0							
शुक्र		0							
शनि									
राहु									
केतु									

लाल किताब में विश्वासघात की दृष्टि

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य		0							
चन्द्रमा							0		0
मंगल					0	0			
बुध									
गुरू									
शुक्र									
शनि									
राहु		0							
केतु									

लाल किताब में सहचरी दिवार दृष्टि

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य				0					
चन्द्रमा									
मंगल					0	0			
बुध									
गुरू	0							0	
शुक्र	0							0	
शनि									
राहु				0					
केतु									

लाल किताब में अचानक प्रहार दृष्टि

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य									
चन्द्रमा									
मंगल							0		0
बुध					0	0			
गुरू				0					
शुक्र				0					
शनि			0						
राहु									
केतु			0						

लाल किताब में परस्पर सहयोग दृष्टि

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य			0						
चन्द्रमा					0	0			
मंगल									
बुध									
गुरू									
शुक्र									
शनि									
राहु			0						
केतु									

ग्रहफल और उपाय–लाल किताब

(सभी भविष्यफल लाल किताब चन्द्र कुण्डली पर आधारित हैं)

दसवें भाव में स्थित गुरू का फल

लाल किताब के अनुसार, सामान्यतः दसवें भाव में बैठा हुआ बृहस्पति शुभ फल नहीं देता है। आप अपनी संतान की ठीक देख–भाल नहीं कर सकते हैं। आपको जीविकोपार्जन के लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ सकती है।

आप नेकी का काम भी करेंगे तो आपको बदनामी मिल सकती है। आपको हर तरफ से मायूसी कासामना करना पड़ सकता है। आपको चरित्रहीन स्त्रियों से कोई संबंध नहीं रखना चाहिए।

लाल किताब के अनुसार, 27वें वर्ष से 36वें वर्ष तक का समय आपके लिए बहुत अधिक ठीक नहींहोगा। आपको अकेले ही संघर्ष करना पड़ेगा, कोई भी आपकी सहायता नहीं करेगा।

आपकी कुण्डली के चौथे भाव में बृहस्पति का कोई शत्रु ग्रह नहीं है। लाल किताब के अनुसार, बहते हुए पानी में तांबे का पैसा बहाने से बृहस्पति का अशुभ प्रभाव दूर हो जाएगा।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति और शुक्र एक साथ दसवें भाव में स्थित हैं। लाल किताब के अुनसार, आपका अपना कमाया हुआ धन ठीक रहेगा। पिता से मिला हुआ धन ठीक नहीं होगा। यदि आप धर्म के विरूद्ध काम करेंगे, तो पैसा हवा की तरह आयेगा और उसी तरह चला भी जायेगा।

दसवें भाव में स्थित गुरू के उपाय और सावधानियाँ

(1) 43 दिन तक बहते हुए पानी में ताँबे का पैसा बहायें।
(2) रविवार के दिन 400 ग्राम या 4 किलो गुड़ बहते हुए पानी में बहायें।
(3) 43 दिन या 7 बृहस्पतिवार मंदिर में बादाम चढ़ायें।
(4) गंधक को जल में प्रवाहित करें।
(5) अपनी नाक साफ रखें।
(6) नंगे सिर न रहें।
(7) सूर्य ग्रहण के दिन बादाम, नारियल, उड़द, तेल दान करें।
(8) अपने घर में भगवान की मूर्ति न स्थापित करें।
(9) केसर का तिलक लगायें।
(10) साधु–सन्यासियों की संगत न करें।
(11) पीला कपड़ा न पहनें।
(12) सोना न धारण करें।
(13) किसी के साथ नेकी न करें।
(14) धर्म–कर्म पर विश्वास करें।
(15) किसी मांगने वाले को भोजन दान न

दें।

नौवें भाव में स्थित सूर्य का फल

लाल किताब के अुनसार, नौवें भाव में बैठा हुआ सूर्य अपनी रोशनी और चमक का पूरा मालिक होता है। आपकी उम्र लंबी होगी। आपका खानदान भी बहुत बड़ा हो सकता है। आपका बचपन सुखमय गुजरेगा। आप अपने परिवार के लिए अपना सब कुछ दांव पर लगा सकते हैं। आप अपने घर वालों से पैसा लेकर दूसरों की सहायता कर सकते हैं। आपके जन्म से ही आपके परिवार की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होने लगेगी। आप कभी भी आर्थिक तंगी का सामना नहीं करेंगे।

आपमें दूसरों का इलाज करने का भी गुण होगा। आपके भाई–बहन और संतान पर भी सूर्य का शुभ प्रभाव पड़ेगा। आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य आपके लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। 34 वर्ष के बाद आपका पूर्ण रूप से भाग्योदय होगा।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति आठवें या दसवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आप डॉक्टर हो सकते हैं तथा दवाईयों से संबंधित कारोबार आपके लिए फायदेमंद होगा।

आपकी कुण्डली में सूर्य और राहु एक साथ नौवें भाव में स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, इस ग्रह युति से कोई शुभ फल प्राप्त नहीं हो सकता है। आपको गले से संबंधित बीमारियां हो सकती हैं। आपको उपाय के तौर पर जौ दूध में धोकर बहते पानी में बहाना चाहिए।

नौवें भाव में स्थित सूर्य के उपाय और सावधानियाँ

(1) चाँदी, चावल या दूध का दान करें।
(2) भूरे रंग के भालू को गेंहू और गुड़ खिलायें।
(3) पीतल के बर्तन प्रयोग करें।
(4) ज्यादा गुस्सा और ज्यादा नम्रता दोनों आपके लिए अशुभ फलदायक है।
(5) माणिक्य धारण करें।
(6) घर का आंगन खुला रखें।
(7) बन्दरों को गुड़ खिलायें।
(8) चारपाई के पायों में ताँबे की कील गाड़ें।

छठवें भाव में स्थित चन्द्रमा का फल

लाल किताब में छठे भाव में स्थित चंद्रमा का फल शुभ नहीं बताया गया है। छठे भाव में स्थित चंद्रमा को ''धोखे की माता और खारा पानी'' कहा गया

है।

लाल किताब के अनुसार, आपके शत्रु साधारण किस्म के होंगे और आपको बहुत हानि नहीं पहुंचा पायेंगे।

यदि आप चिकित्सा संबंधी किसी व्यवसाय में लगे हुए हैं, तो आप सफल हो सकते हैं।

छठे भाव में चंद्रमा के रहते समय आपकी माता को प्रायः कष्ट लगा रह सकता है। यदि आप ट्रैवलएजेन्ट का काम करते हैं, तो भारी मात्रा में धन अर्जित कर सकते हैं।

आपको 24वें और 25वें वर्ष में विवाह नहीं करना चाहिए, अन्यथा आपकी माता पर इसका अशुभ प्रभाव हो सकता है।

आपकी कुण्डली का दूसरा भाव खाली है। लाल किताब के अनुसार, चंद्रमा का फल उतना शुभ नहीं रह पायेगा।

आपकी कुण्डली में आठवें भाव में चंद्रमा के मित्र ग्रह स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, आपकी उम्र पर इसका बहुत शुभ प्रभाव होगा।

आपकी कुण्डली में शुक्र उच्चस्थ नहीं है। लाल किताब के अनुसार, आपके जीवनसाथी को कष्ट हो सकता है। उपाय के तौर पर आपको खरगोश पालना चाहिए।

छठवें भाव में स्थित चन्द्रमा के उपाय और सावधानियाँ

(1) अपने हाथ से पिता को दूध पिलायें।
(2) चने की दाल, गुड़, गेंहू इत्यादि किसी धार्मिक स्थल पर दान करें।
(3) दूध का दान कभी न करें।
(4) अस्पताल या श्मशान में प्याऊ लगवायें।
(5) खरगोश पालें।
(6) रात में दूध का सेवन कदापि न करें।
(7) अपना राज किसी दूसरे को न बतायें।
(8) यदि आपकी माता का स्वास्थ्य काफी दिनों से खराब चल रहा है, तो इस स्थिति में किसी धार्मिक स्थल पर दूध का दान करना चाहिए।
(9) अपनी नानी से आशीर्वाद के रूप में चाँदी लेकर अपने पास रखें।
(10) चाँदी का दान न करें।
(11) सोमवार का व्रत रखें।
(12) शिवजी की पूजा करें।
(13) घर की छत के नीचे कुआं या हैंडपम्प न लगायें।

दसवें भाव में स्थित शुक्र का फल

लाल किताब के अनुसार, आप अपनी जवानी के दिनों में प्रेम संबंधों में उलझे रह सकते हैं।

लाल किताब के अनुसार, यदि आपके मकान की पश्चिमी दीवार के साथ कोई मिट्टी वाला स्थान है, तो यह आपकी आर्थिक स्थिति के लिए शुभ स्थित है।

लाल किताब के अनुसार, यदि आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं हो, तो आपको कपिला गाय का दान करना चाहिए।

आपकी कुण्डली में चौथा भाव खाली है। लाल किताब के अनुसार, आप बहुत अधिक हिम्मती नहीं होंगे। आपकी पत्नी आप पर हावी रहेंगी।

दसवें भाव में स्थित शुक्र के उपाय और सावधानियाँ

(1) मिट्टी या कपास मंदिर में दान करें।
(2) आप और आपकी पत्नी को अपना गुप्तांग दही से धोना चाहिए।
(3) अपने मकान के पश्चिम दीवार से सटे मिट्टी वाला स्थान छोड़ दें।
(4) माँस–मदिरा से दूर रहें।
(5) यदि बहुत अधिक बीमार पड़ते हैं, तो काली गाय दान करें।
(6) घर आये मेहमान की सेवा करें।
(7) हीरा पहनें।

पहले भाव में स्थित मंगल का फल

लाल किताब में लग्नस्थ मंगल को युद्ध क्षेत्र का हीरो या न्याय की तलवार कहा गया है। आपके 32 दाँत हो सकते हैं, जो कि शुभ मंगल की निशानी है। आपका आर्थिक विकास 28वें साल में हो सकता है। आपको दूसरों का उपकार कभी नहीं भूलना चाहिए, एवं हमेशा सत्य का साथ देना चाहिए।

आपकी शारीरिक संरचना सुदृढ़ होगी और आपको अपने कार्य में बड़ी सफलता प्राप्त होगी। आपकोशनि से संबंधित वस्तुओं जैसे स्टील, लकड़ी एवं भवन निर्माण संबंधित वस्तुओं के व्यापार सेविशेष लाभ प्राप्त हो सकता है। यदि आप अपने चाचा, ताउ, भतीजों अथवा दोस्तों के साथ कोईव्यवसाय शुरू करते हैं, तो इससे आपको लाभ प्राप्त होगा। आपको अपने भाई–बन्धुओं एवं ससुराल पक्ष से काफी सहयोग मिलेगा। आपको किसी के साथ झगड़े–फसाद से बचना चाहिए।

यदि आप किसी भी व्यक्ति से मुफत में कोई सामान लेते हैं, तो यह आपकी सुख–शांति के लिए और आर्थिक स्थिति के लिए भी नुकसानदेह साबित होगा। आप अपने भाई–बहनों में सबसे बड़े होसकते हैं। आपकी कोई भी बहन नहीं हो सकती है और यदि है, तो उसका लालन–पालन

राजकुमारियों की तरह होगा।

जैसा कि मंगल लग्न में स्थित है, आपको बाल्य काल में उदर रोग एवं दाँतों के रोग हो सकते हैं।आप शत्रुओं से एवं धार्मिक लोगों से झगड़ा कर सकते हैं।

आपकी कुण्डली में मंगल या तो स्वग्रही है या उच्चस्थ है। लाल किताब के अनुसार, आप निरोग, यशस्वी एवं राज्य की तरफ से सम्मान पाने वाले होंगे।

लाल किताब के अनुसार, आपके लग्न में मंगल होने से आप कई व्यवसाय की ओर आकृष्ट हो सकते हैं, परन्तु किसी में भी सफलता मिलने की संभावना कम ही होगी। आपको ऐसा भ्रम नहीं पालना चाहिए, कि सिर्फ आप ही एक चालाक हैं, और बाकी सब मूर्ख हैं।

लाल किताब के अनुसार, आप अपने माता–पिता की अकेली संतान नहीं हो सकते हैं। आपके औरभाई–बहन जरूर होंगे।

लाल किताब के अनुसार, आपको अपने दुश्मनों से किसी भी तरह की हानि होने की संभावना नगण्य है। आपको बुरी आदतों से बचना चाहिए।

पहले भाव में स्थित मंगल के उपाय और सावधानियाँ

(1) आपको मुफत में अथवा दान में कोई भी वस्तु नहीं लेनी चाहिए। (मंगल अशुभ)
(2) आपको बुरे काम और झूठ बोलने से बचना चाहिए। (मंगल अशुभ)
(3) आपको संतों, फकीरों, झाड़–फूंक करने वालों के साथ नहीं रहना चाहिए।
(4) आपको हाथी दाँत की वस्तुओं के लेन–देन से बचना चाहिए। (मंगल अशुभ)
(5) आपको मंगल से संबंधित वस्तुओं का व्यापार करना चाहिए।
(6) आपको महागायत्री का पाठ करना चाहिए तथा हनुमान जी को सिंदूर का लेप करना चाहिए।
(7) आपको मूंगा (लाल) धारण करना फायदेमंद होगा। यदि आपको मूंगा नहीं प्राप्त होता है, तो आप ताँबा भी धारण कर सकते हैं।
(8) आपको अपने भाइयों की सेवा करनी चाहिए।
(9) शुद्ध चाँदी धारण करना फायदेमंद रहेगा।
(10) सौंफ का कारोबार आपके लिए फायदेमंद रहेगा।

आठवें भाव में स्थित बुध का फल

लाल किताब में आठवें भाव में स्थित बुध का फल खराब बताया गया है। आपको आर्थिक नुकसान उठाना पड़ सकता है। आपके दाँतों में खराबी हो सकती है और नाड़ियों से संबंधित बीमारी हो सकती है। आपके द्वारा किया गया कारोबार अधिक दिन तक नहीं टिक सकता है।

आपको अपने जन्मदिन से 34 दिन पहले और 34 दिन बाद तक के समय में मिट्टी के कुल्हड़ में

शहद या गुड़ भरकर वीराने में दबाना चाहिए। इसके अलावा, अपने छत पर बारिश का पानी या दूध रखें।

आपकी कुण्डली में बुध अकेला बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, ऐसे में बुध का अशुभ प्रभावआपकी बहन, बुआ या बेटी पर पड़ सकता है।

आपकी कुण्डली में दूसरा भाव खाली है। लाल किताब के अनुसार, बुध का अशुभ प्रभाव आप पर 34 वर्ष की उम्र तक पड़ता रहेगा।

आपकी कुण्डली में बारहवां भाव खाली है। लाल किताब के अनुसार, आपको पुट्ठो से संबंधित बीमारियां हो सकती हैं।

आठवें भाव में स्थित बुध के उपाय और सावधानियाँ

(1) 8 फूल या 8 फल (गोल), साबुत मूंग हरे कपड़े में बांधकर 8 सोमवार मंदिर में दान करें।
(2) आपको तोता नहीं पालना चाहिए।
(3) अपने घर में चौड़े पत्ते वाले पौधे न लगायें।
(4) यदि चंद्रमा दूसरे भाव में है, तो 34 पेड़े (बिना चीनी के) कुत्तों को खिलायें।
(5) हिजड़ों को सफेद रंग का सूट/साड़ी और काली जुराबें दान करें।
(6) नाक छिदवायें और 100 दिन तक उसमें चाँदी पहनें।
(7) बुधवार के दिन 8 कन्याओं को लाल चुड़ियां दान करें।
(8) पीला कपड़ा 43 दिन तक नदी या तालाब में धोयें।
(9) खुम्बी (मशरूम) मिट्टी के बर्तन में डालकर मंदिर में रखें।
(10) कन्या पूजन करें।
(11) मिट्टी के बर्तन में शहद भरकर उसे श्मशान में या विराने में दबायें।
(12) छत पर बारिश का पानी या दूध रखें।
(13) काले रंग का अण्डरवीयर/अन्तःवस्त्र पहनें।
(14) घर में पूजा का स्थान न बदलें।
(15) घर की सीढ़ियों की मरम्मत करवाते रहें।
(16) अपनी लड़की के नाक में चाँदी का छल्ला पहनायें।
(17) दुर्गा पाठ करें।
(18) बुधवार का व्रत करें।
(19) लड़की, बुआ, बहन और साली की सेवा करें।

तीसरे भाव में स्थित शनि का फल

आपकी कुण्डली में शनि तीसरे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, यदि आपके मकान का दरवाजा पूर्व या दक्षिण दिशा में है, तो उसका असर बहुत अशुभ होगा। यदि मकान के आखिरी में

कोई ऐसी कोठरी है जिसमे रोशनी ना जाती हो तो शनि का असर धन–संपत्ति के लिए बहुत ही शुभ होगा।

जब तक आप शराब, मांस का प्रयोग नहीं करेंगे, आपकी आयु पर शुभ प्रभाव पड़ेगा।

आपकी कुण्डली में केतु तीसरे या दसवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपका मकान भी बनेगा तथा उसका असर शुभ होगा।

आपकी कुण्डली में केतु तीसरे या दसवें भाव में स्थित है। आपके लिए भूरा कुत्ता पालना लाभदायक होगा।

तीसरे भाव में स्थित शनि के उपाय और सावधानियाँ

(1) यदि आप ती चितकबरे (काले और सफेद) कुत्ते पालें तो धन–संपत्ति में वृद्धि होगी।
(2) घर के आखिरी में एक अंधेरी कोठरी रखें और उसमें शनि की वस्तुओं को स्थापित करें।
(3) घर की दहलीज में लोहे की कीलें ठोकें।
(4) यदि आंखों पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है, तो आंखों की दवाई मुफत में बांटें।
(5) गणेश की पूजा करें।
(6) माँस–मदिरा का सेवन न करें।
(7) अपने मकान का दरवाजा पूर्व या दक्षिण की तरफ न रखें।
(8) अपने घर के छत पर बिना दरवाजे की चौखट और ईंधन आदि न रखें।
(9) घर की चाहरदीवारी के अन्दर बेरी का पेड़ न लगायें।
(10) उड़द, चमड़े और लोहे का सामान दान करें, या जल में प्रवाहित करें।
(11) अपने ताया–चाचा की सेवा करें।

नौवें भाव में स्थित राहु का फल

लाल किताब के अनुसार, आप पागलों का इलाज सही प्रकार से कर सकते हैं। आप साधुओं और फकीरों के साथ घुल–मिलकर रह सकते हैं। आप उन पर पैसा भी खर्च कर सकते हैं।

यहां बैठा हुआ राहु चंद्रमा के फल को थोड़ा बहुत अशुभ करता है। यदि आप अपने बड़ों से लड़ाई–झगड़ा करते हैं, तो आपकी संतान पर बुरा असर पड़ सकता है।

आपको अपने ससुराल के लोगों से झगड़ा–फसाद नहीं करना चाहिए। आपको कुत्ता पालना चाहिए,जो कि आपकी संतान के लिए शुभ होगा।

नौवें भाव में स्थित राहु के उपाय और सावधानियाँ

(1) कुत्ता पालें।
(2) परिवार का मुखिया न बनें।
(3) सिर पर चोटी रखें।
(4) केसर का तिलक लगायें।
(5) सोना पहनें।
(6) अपने ससुराल से संबंध मुधर रखें।
(7) संयुक्त परिवार में रहें।
(8) धार्मिक स्थलों की यात्रा करते रहें।
(9) घर के दहलीज के नीचे से गंदा पानी न बहने दें।
(10) घर के आस–पास गंदा पानी जमा न होने दें।
(11) भंगी की सेवा करें।
(12) सरसों, तम्बाकू दान करें।
(13) तम्बाकू न खायें।

तीसरे भाव में स्थित केतु का फल

सामान्यतः लाल किताब में तीसरे भाव में स्थित केतु का फल अशुभ ही बताया गया है। आपको रीढ़की हड्डी से संबंधित बीमारियां और बड़ी मात्रा में फोड़े–फुंसियां हो सकती हैं। ऐसी स्थिति से बचाव के लिए आपको कानों में सोने की बालियां पहननी चाहिए।

आपकी कुण्डली में केतु तीसरे भाव में बैठा हुआ है। आपके ससुराल और भाइयों की हालत ठीक नहीं हो सकती है, परन्तु आपकी संतान पर इसका कोई असर नहीं होगा। आप अन्दर से काफी भले आदमी होंगे।

आपको बिना सोचे–समझे दूसरों से सलाह नहीं लेनी चाहिए, अन्यथा इसका बुरा असर आपके भाइयों और आपके ससुराल पर पड़ सकता है।

यदि आपका साला आपके घर पर रहता है, तो यह आपके छोटे भाई के लिए अशुभ है।

सामान्यतः आपके पड़ोसी के घर की स्थिति ठीक नहीं हो सकती है। आपको अपने भाइयों के बारे में कभी बुरा नहीं सोचना चाहिए, अन्यथा इसका असर आपके लिए बहुत बुरा होगा और आपके पुत्रपर भी इसका बुरा असर हो सकता है।

आपको फेफड़ों की बीमारियां या अन्य कारणों से स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ रहा हो, तो चने की दाल या केसर बहते हुए पानी में बहाना चाहिए।

यदि आपकी आर्थिक स्थिति पर केतु का बुरा असर पड़ रहा है, तो कानों में सोने की बालियां पहननी चाहिए।

तीसरे भाव में बैठा केतु आपको व्यर्थ की यात्राओं में लगाये रख सकता है। ऐसे प्रभाव से बचने

के लिए दूध–चावल या गेहूं–गुड़ बहते हुए पानी में बहाना चाहिए।

तीसरे भाव में स्थित केतु के उपाय और सावधानियाँ

(1) केसर का तिलक लगायें।
(2) फेफड़े की बीमारी इत्यादि में चने की दाल या केसर बहते हुए पानी में बहायें।
(3) फोड़े–फुंसियों से बचाव और आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए सोना पहनें।
(4) व्यर्थ की यात्राओं से बचने के लिए दूध–चावल अथवा गुड़–गेंहूं को बहते हुए पानी में बहायें।
(5) मकान के दरवाजे पर ताँबे का पत्तर लगवायें।
(6) यदि घर में रस्सी, सूत अथवा उन के गोले पड़े हुए हों, तो उसको इस्तेमाल करें, उसको ऐसे ही न छोड़ें।
(7) दो रंगा पत्थर पहनें।
(8) चितकबरा (काला और सफेद) कम्बल धर्मस्थान में दान दें।
(9) चितकबरा (काला और सफेद) कम्बल का टुकड़ा श्मशान में दबायें।

ग्रहफल लाल–किताब

(सभी भविष्यफल लाल किताब चन्द्र कुण्डली पर आधारित हैं)

सूर्य नवम् भाव में

आपकी कुण्डली में सूर्य नौवें भाव में स्थित है। आपको उत्तम वाहन का सुख प्राप्त होगा। आप भाग्यवान होंगे। आपका संबन्ध एक बड़े परिवार से होगा। आप परोपकारी होंगे। आप अपने परिवार के लिये समर्पित होंगे और अपने परिवार की प्रगति के लिये कार्य करेंगे। अपने परिवार की सेवा आपके जीवन का लक्ष्य होगा और आप अपने परिवार की प्रगति और समृद्धि के लिये अपना जीवनलगा देंगे। आपके जीवन का 22वॉ साल आपके लिये लाभकारी परिणाम लायेगा और आप कुछ लाभ प्राप्त करेंगे। आपके माता–पिता का आशीर्वाद आपको सरकार से मान प्राप्त कराने में सहायक होगा। यदि आप तीर्थ स्थानों की यात्रा करते हैं तो आपको शुभ परिणाम प्राप्त होंगे। आप अपने परम्परागत व्यवसाय या सरकारी अनुबंधों द्वारा लाभ प्राप्त करेंगे। आपको माता–पिता का सुखप्राप्त होगा। आप सभी सांसारिक सुखों का आनन्द प्राप्त करते हुये बड़े होंगे। आप अपने पौत्र–पौत्रियों और प्रपौत्र–प्रपौत्रियों का जन्मोत्सव मनायेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति बहुत उत्तम होगी। आप एक निरोग कर्ता की तरह कार्य करेंगे और लोगों का उपचार करेंगे। आपके पिता को सरकार से लाभ प्राप्त होगा। आप एक बड़े परिवार की जिम्मेदारी का निर्वाहन करेंगे। आप धार्मिक कार्यों के द्वारा प्रगति करेंगे और नाम कमायेंगे। आप अपनी बहादुरी से भाग्यवान बनेंगे। आप एक राजा के समान

रहेंगे।

यदि आपकी रसोई में कोई खाली बर्तन लम्बे समय से रखा हुआ है, आपके घर का मुख्य द्वार दक्षिण दिशा में है या आप अपने भाई–बहनों के साथ झगड़ा करते हैं तो आपका सूर्य कमजोर हो सकता है। यदि आपका सूर्य किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आप अत्यधिक विनम्रता या अहं के कारण सब कुछ गवॉ सकते हैं। आपको उपहार या दान की गई वस्तुओं को लेने से हानि हो सकती है। आपको यात्राओं के दौरान परेशानी हो सकती है। आपके भाई–बहन आपका विरोध कर सकते हैं। आपका भाग्य आपसे रूठ सकता है। कभी–कभी आपको अपनी भलाई के कार्यों केबदले बुरे परिणाम प्राप्त हो सकते हैं और आपके साथ सम्बन्ध रखने वाले लोगों को हानि हो सकती है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1– दान या उपहार न लें।
2– न ही बहुत आक्रामक हों और न ही बहुत विनम्र बनें।

उपाय :

1– कांसें के बर्तन का प्रयोग करें।
2– चार सूखे नारियल सूर्य ग्रहण के दौरान पानी में प्रवाहित करें।

चन्द्रमा षष्ठ भाव में

आपकी कुण्डली में चन्द्रमा छठे भाव में स्थित है। आपकी पुत्रियों की संख्या पुत्रों से अधिक हो सकती है। आप बुद्धिमान होंगे और बड़ी बुद्धिमानी के साथ योजना बनायेंगे। मुकदमों में आपको सफलता प्राप्त होगी। आपको अपने ननिहाल से लाभ और सहयोग प्राप्त होगा। आपको एक कहावत सदैव याद रखनी चाहिये – जैसा आप बोयेंगे, वैसा ही काटेंगे। आपकी बहन, बुआ और पुत्री का जीवन समृद्धिपूर्ण और आनन्द से भरा होगा। आप अपना व्यवसाय बदल सकते हैं या आपका स्थानांतरण बार–बार हो सकता है। आप बहुत दयालु व परोपकारी होंगे और सदैव लोगों की मदद करेंगे। आपको किसी प्रकार की आर्थिक तंगी का सामना नहीं करना पड़ेगा। आपके शत्रु आपसे डरेंगे।

यदि आप अपनी बहन और पुत्री का धन प्रयोग करते हैं, अपनी गुप्त बातें लोगों को बतायेंगे, सूर्यास्त के बाद दूध पीयेंगे, दूसरों के लिये कुँआ बनवायेंगे या नल लगवायेंगे तो आपका चन्द्रमा कमजोर हो सकता है। यदि आपका चन्द्रमा किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आपकी माता के सुख में कमी हो सकती है या आपको अपना बचपन अपनी सौतेली माता के साथ बिताना पड़ सकता है। यदि आप लोगों के लिये 24 साल की आयु के दौरान पानी के स्रोतों का निर्माण करवाते हैं तो इसका बुरा प्रभाव आपकी माता और संतान पर पड़ सकता है। आपके जीवनसाथी नेत्र रोग से पीड़ित हो सकते हैं। आपके ससुराल वालों को हानि हो सकती है। आपको कानूनी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आप चिन्तित रह सकते हैं। यदि आप कोई काम सोच–समझ कर नहीं करेंगे तो आपको समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आपकी माता को कष्ट हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1– लोगों के लिये 24 साल की आयु के दौरान पानी के स्रोतों का निर्माण न करवायें।
2– अपने राज दूसरों को न बतायें।
3– सूर्यास्त के बाद दूध न पियें।

उपाय :

1– पानी के स्रोतों का निर्माण किसी अस्पताल या श्मशान में करवाना शुभ होगा।
2– जब आपकी माता को कष्ट हो तो खरगोश की सेवा करें।
3– चन्द्र ग्रहण के समय चार सूखे नारियल पानी में प्रवाहित करें।

मंगल प्रथम भाव में

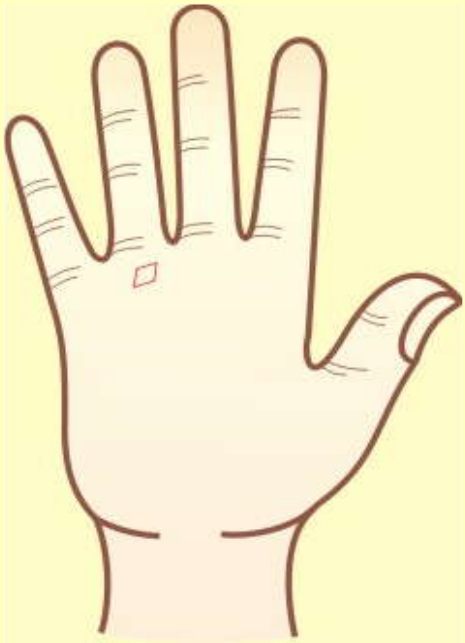

आपकी कुण्डली में मंगल पहले भाव में स्थित है। आप दोहरी प्रकृति के व्यक्ति नहीं होंगे और आपबाहर तथा अन्दर से एक तरह ही होंगे। आपकी प्रकृति और व्यवहार समान होंगे। आप बहादुर,उत्साही और प्रसन्नचित्त होंगे। आप विद्वान होंगे। आप अच्छे और बुरे सभी तरह के लोगों के साथ नेकी करेगें। आप साधु और गरीबों की मदद करेंगे। आपको छोटे भाई–बहनों तथा संतान का सुख प्राप्त होगा। आप अपने परिवार के लिये भाग्यशाली साबित होंगे और अपने परिवार को समृद्ध तथा खुशहाल बनायेंगे। 18 साल की आयु के बाद आप सरकारी नौकरी या परामर्श के कार्योंमें रूचि लेंगे। शत्रु आपको हानि नहीं पहुँचा पायेंगे और आपकी उनसे रक्षा होगी। यदि आप

नौकरी करते हैं तो आप वह कार्य 35 से 40 साल की आयु तक ही करेंगे। आपको राज्य सरकार से लाभ प्राप्त होगा। आप आक्रामक प्रकृति के होंगे और यदि कोई आप पर आक्रमण करता है तो आप उसका करारा जबाव देंगे। आप 28 साल की आयु के बाद प्रगति करेंगे। उच्च अधिकारियों सेआपके अच्छे संबंध होंगे। लोहे, लकडी और घर से सम्बन्धित व्यवसाय आपके लिये लाभकारी होंगे। यदि आप अपने परिवार के सदस्यों के साथ मिलकर काम करेंगे तो यह आपके लिये लाभदायक होगा। आप दूसरों के अच्छे काम को कभी नहीं भूलेंगे और उनका अहसान मानेंगे। आपका आशीर्वाद लोगों के लिये फलदायी होगा।

यदि आप दान लेंगे या कोई चीज बिना मोल दिये लेंगे, झूठ बोलेंगे, अपनी माता को कष्ट देंगे या उनका विरोध करेंगे, लोगों को गाली देंगे तो आपका मंगल कमजोर हो सकता है। यदि आपका मंगल किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आपको शारीरिक कष्ट हो सकता है। आप अपने आलस के कारण बनते काम खराब कर सकते हैं। आपको मानसिक रोग हो सकता है या आप तनावग्रस्त रह सकते हैं। आप किसी दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं। आपकी माता का आप्रेशन होसकता है। आपके भाई को कष्ट हो सकता है और आपकी बहन खुश नहीं रह सकती है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1– दान न लें या कोई चीज बिना मोल दिये न लें।
2– घर पर हाथी दॉत न रखें।

उपाय :

1– यदि आपके बड़े भाई जीवित हैं तो लाल रूमाल अपने पास रखें।
2– अपने भाई और साले की सेवा करें।

आपकी कुण्डली में बुध आठवें भाव में स्थित है। आपको कठिन परिश्रम करना पड़ेगा। आपको गूढ़ विज्ञान में रूचि होगी या आपको उसका ज्ञान होगा। 34 साल की आयु के बाद आपका समय अच्छा होगा। आपको सरकार से सम्मान प्राप्त होगा। अपने ससुराल से आपको लाभ प्राप्त होगा।

यदि पराई औरतों के साथ आपके अनैतिक संबंध होंगे, आपके घर पर लाल, गुलाबी रंग के इस्तेमाल न होने वाले कपड़े या मिट्टी के बर्तन या टूटी हुई सीढ़ियॉ होंगी तो आपका बुध कमजोरहो सकता है। यदि आपका बुध किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आपका धन बर्बादहो सकता है। आपका समय बुरा हो सकता है। आप अज्ञात कारण से बर्बाद हो सकते हैं। आपको बुद्धिमानी के साथ काम करना होगा, अन्यथा आपको कारावास हो सकती है। आप अस्पताल या किसी एकांत स्थान पर जा सकते हैं। आपको अचानक अपने व्यवसाय में बाधाओं कासामना करना पड़ सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1– अपने घर पर लाल, गुलाबी रंग के इस्तेमाल न होने वाले कपड़े न रखें।
2– घर पर पूजा का स्थान न बदलें।

उपाय :

1–घर की छत पर बारिश का पानी रखें।

2– काले रंग की जांघिया पहनें ।

बृहस्पति दशम भाव में

आपकी कुण्डली में बृहस्पति दसवें भाव में स्थित है। आपको अपने जीवन यापन के लिये अकेले हीसंघर्ष करना पड़ सकता है। आप अपनी वीरता के द्वारा यश प्राप्त करेंगे। आप सोने, चांदी और कपड़ों से सम्बन्धित व्यवसाय के द्वारा भारी लाभ कमायेंगे। कपड़ों का व्यवसाय और दलाली के काम से आपको अधिक धन और यश प्राप्त होगा। 29 साल की आयु से आपको सुख मिलना आरम्भ हो जायेगा। आपको अपने पिता से उतना सहयोग नहीं प्राप्त हो सकता है, जितना आपको आवश्यक होगा। आपको शिल्पकारी से संबंधित काम में बहुत धन प्राप्त होगा। आपकी धर्म में आस्थाहोगी और आप कल्याणकारी काम करेंगे। आपका वैवाहिक जीवन सामान्य होगा। आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। सरकारी विभाग से संबंधित यात्राओं में आप बहुत धन कमायेंगे। विदेशी यात्रा के द्वारा भी आपको अधिक लाभ प्राप्त होगा।

यदि आप अपनी शिक्षा पूरी नहीं करेंगे, शेखचिल्ली की तरह सपनें देखते रहेंगे, आपके घर के पास या घर पर पीपल का कोई सूखा पेड़ होगा तो आपका बृहस्पति कमजोर हो सकता है। यदि आपका बृहस्पति किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आप चरित्रहीन औरतों के साथ रहेंगे औरदुःखी रहेंगे। अपनी संतान से आपके संबंध मधुर नहीं हो सकते हैं। आगजनी के कारण आपकोहानि हो सकती है। यदि आप 36 साल की आयु के बाद मन्दिर जायेंगे और वहॉ पर

प्रार्थना करेंगे तो आपको लाभ मिलेगा। आपको अपना चरित्र सही रखना चाहिये और चोरी के काम में शामिल नहीं होना चाहिये।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1– सोना न बेचें।
2– सोना या पीले रंग के कपड़े न पहनें।

उपाय :

1– साधु और गुरू की सेवा करें।
2– पीपल के वृक्ष को जल दें।
3– 43 दिन तक बहते पानी में तांबे का सिक्का प्रवाहित करें।

शुक्र दशम भाव में

आपकी कुण्डली में शुक्र दसवें भाव में स्थित है। आप कामुक, लालची और घमण्डी हो सकते हैं। आपको दस्तकारी में रूचि हो सकती है। आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा और आप शारीरिक रूप से मजबूत होंगे। आप बागों के मालिक होंगे और आपके पास पर्याप्त धन होगा। आप जीवन में दुर्घटना के शिकार कभी नहीं होंगे। आपकी युवावस्था के दौरान आपके कई प्रेम प्रसंग हो सकते हैं। आप अपनी बुद्धिमानी और चतुराई से बहुत लाभ कमायेंगे, लेकिन आपको कुछ हानि भी हो सकती है। आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य उत्तम होगा। आपकी पत्नी आपकी मुश्किलों से रक्षा करेंगी। जब आप अपनी पत्नी के साथ रहेंगे तो आपके साथ कोई अशुभ घटना नहीं होगी।

यदि आप मांस–मदिरा का सेवन करेंगे, महिलाओं पर अधिक विश्वास करेंगे, मछली का शिकार करेंगे तो आपका शुक्र कमजोर हो सकता है। यदि आपका शुक्र किसी कारणवश कमजोर हो जाताहै तो आपकी पत्नी आप पर प्रभावी रहेगी। यदि पराई औरतों के साथ आपके संबंध हुये तो आपकी संतान को परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। आपको संतान सुख नहीं मिल सकताहै। आपके विवाह के बाद आपकी पत्नी बीमार हो सकती हैं या उनका स्वास्थ्य अच्छा नहीं हो सकता है। इस कारण से आपको परेशानी हो सकती है। आपको मूत्र संबंधित रोग हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1– मदिरा और मछली का सेवन न करें।
2– महिलाओं के पीछे न भागें।

उपाय :

1– कपिला गाय दान करें।
2– आपकी पत्नी को अपने शरीर पर दूध या दही मलकर स्नान करना चाहिये।

शनि तृतीय भाव में

आपकी कुण्डली में शनि तीसरे भाव में स्थित है। आप विद्वान और विवेकी होंगे। आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। आप पर्याप्त धन कमायेंगे और आपको आर्थिक तंगी का सामना नहीं करना पड़ेगा। लेकिन आप अपव्ययी हो सकते हैं। आप परोपकारी होंगे और दूसरों की मदद करेंगे। आपको चोरी और धन हानि से सजग रहना चाहिये। आप अपने जीवन में बाधाओं का सामना कर सकते हैं। आप साहसी होंगे। आपको अपने भाई–बहनों से सुख और मदद मिलेगी। लोहे या मशीनरी से संबंधित कोई काम आपके लिये लाभदायक होगा।

यदि आप चोरी करेंगे या किसी को धोखा देंगे, दूसरों का काम बिगाड़ेंगे, दक्षिण या दक्षिण–पूर्व मुखीघर में रहेंगे तो आपका शनि कमजोर हो सकता है। यदि आपका शनि किसी कारणवश कमजोरहो जाता है तो आपको नगद धन की तंगी हो सकती है। आपके पुत्र को परेशानी हो सकती है। आपकी नजर कमजोर हो सकती है। आपको अपने छोटे भाई का सुख नहीं मिल सकता है या आप घर से दूर रह सकते हैं। आपके भाई और संबंधी आपकी भलाई को भूल सकतेहैं। आपको कुत्ते के काटने का खतरा हो सकता है। आपको अपना घर बनाने में बहुत संघर्षकरना पड़ सकता है। चोरी या धोखेबाजी करने के बावजूद आपको धन का अभाव हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1– मछली और मदिरा का सेवन न करें।
2– घर पर बेर या कॉटेदार कोई पेड़ न लगायें।

उपाय :

1– तीन कुत्तों को अपने खाने का कुछ भाग दें।
2– अपने घर के अन्त में अंधेरे कमरे का निर्माण करें।

राहु नवम् भाव में

आपकी कुण्डली में राहु नौवें भाव में स्थित है। आपको धर्म और पूजा में कम विश्वास होगा। कभी–कभी आप एक नास्तिक की तरह भी व्यवहार कर सकते हैं। आपकी मान–प्रतिष्ठा धूमिल हो सकती है। यदि अपने भाई–बहन के साथ आपके मधुर संबंध हुये तो आपको शुभ परिणाम प्राप्त होंगे। आप शनि से संबंधित वस्तुओं के व्यवसाय में उन्नति करेंगे। यदि अपनी संतान के साथ आपके मधुर संबंध हुये तो आपको लाभ प्राप्त होगा। आप धन संग्रह करेंगे। आप जादू सीखने में रूचि लेंगे। आप एक निपुण मनोवैज्ञानिक हो सकते हैं।

यदि अधार्मिक कार्य करेंगे, डॉक्टर बनकर लालच करेंगे, परिवार से अलग होंगे, अपने घर के मुख्य द्वार की दहलीज के नीचे से सीवर की नाली निकाली तो आपका राहु कमजोर हो सकता है। यदिआपका राहु किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आप कोर्ट में मामलों और संतान के कारण परेशानी का सामना कर सकते हैं। आपके बडे भाई बीमार हो सकते हैं। आपके दादा, पिता और ससुर आपके कारण बर्बाद हो सकते हैं। आपकी पत्नी का गर्भपात हो सकता है। आपके संबंधी आपके लिये परेशानी पैदा कर सकते हैं। आप साधुओं की संगति में अपने धन का अपव्यय

कर सकते हैं। यदि आप अपने बुर्जगों के साथ झगड़ा करेंगे तो आपके स्वास्थ्य और संतान पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है। अपने ससुराल वालों के साथ रहेंगे या उनके साथ अधिक संबंध रखेंगे तो आपको हानि हो सकती है। आप तीर्थयात्रा के दौरान बाधाओं का सामना कर सकते हैं। आपकोदान करना या बोझ पसन्द नहीं होगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1– साधुओं के संबंध न रखें।
2– पराई औरतों के साथ संबंध न रखें।

उपाय :

1– शुद्ध सोना पहनें।
2– धार्मिक स्थान पर सिर झुकायें।

आपकी कुण्डली में केतु तीसरे भाव में स्थित है। आपको अपनी यात्राओं से लाभ प्राप्त होगा। आप अच्छी चीजों को याद रखेंगे और बुरी चीजों को भूल जायेंगे। आपका भाग्य चमकेगा। आपको पुत्र की प्राप्ति होगी। वह भाग्यशाली होगा। वह चरित्रवान और आज्ञाकारी होगा। आपको भगवान में आस्था होगी और आप दूसरों की मदद करेंगे। आपको 24वें साल की आयु के दौरान शुभ परिणाम प्राप्त होंगे। आपको दूसरों से सलाह नहीं लेनी चाहिये, वे आपको गलत सलाह दे सकते हैं।

यदि आप अपने भाई और चाचा से लड़ेंगे, अपने साले के साथ साझेदारी में कोई व्यापार करेंगे तो आपका केतु कमजोर हो सकता है। यदि आपका केतु किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आपको जननांग या मूत्र से संबंधित कोई रोग हो सकता है। आपकी संतान निकम्मी हो सकती है या आप उसके कारण चिन्तित रह सकते हैं। आप बिना किसी कारण के घूम सकते हैं और अपने भाई से अलग रह सकते हैं। आप अपने संबंधियों के कारण दुःखी रह सकते हैं। सम्पत्ति संबंधी मुकदमों में आपके धन का अपव्यय हो सकता है। आप अपनी साली के साथ विवाद और पत्नी के साथ मतभेद के कारण अपनी पत्नी से अलग हो सकते हैं। आपको रीढ़ की हड्डी से संबंधित कोई रोग हो सकता है। आपके शरीर या हड्डी में चोट लग सकती है। आपकी संतान को आपकी24 साल की आयु के दौरान परेशानी हो सकती है। इस समय भाग्य आपका साथ नहीं दे सकता है। आपको रक्त विकार हो सकता है या आपके शरीर पर फोड़ा हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1– अवारा न घूमें।
2– अपने भाई से दूर न रहें।

उपाय :

1– कान में बाली पहनें।
2– सोना पहनें।

जीवन के विभिन्न पहलुओं से संबंधित कारण और उपाय

(सभी भविष्यफल लाल किताब चन्द्र कुण्डली पर आधारित हैं)

शिक्षा से संबंधित भविष्यफल और उपाय –

यदि आप परीक्षा में लाल रंग का पेन जिसका कैप सुनहरा हो, जिसमें किसी भी रंग की स्याही भरीहो, उसका इस्तेमाल करेंगे, तो परीक्षा में अवश्य उतीर्ण होंगे।

जेहि पर कृपा करहि जनु जानी। कबि उर अजिर नचावहि बानी।
मोरि सुधारिहि सो सब भांती। जासु कृपा नहिं कृपा अघाती।

इस चौपाई का 108 बार प्रतिदिन प्रातः काल जप करें।

ऊँ माँनिसाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतोः समाः।
यत् क्रौञ्चमिथुना देकमवधीः काममोहितम्।

इस मंत्र का प्रतिदिन प्रातःकाल जागते ही बिना किसी से बोले तीन बार जप करने से उत्तम विद्या की प्राप्ति होती है।

जनक सुता जग जननी जानकी।
अजिसय प्रिय करूनानिधान की।
ताके जुग पद कमल मनावउँ।
जासु कृपा निर्मल मति पावउँ।

श्री जानकी अथवा श्री सीता राम जी के चित्रपट का पूजन करके इस मंत्र का 108 बार प्रतिदिन जाप करने से उत्तम विद्या की प्राप्ति होती है।

बुद्धिहीन तनु जानि के, सुमिरौ पवन कुमार।
बल बुद्धि विद्यादेहु मोहिं हरहु कलेस विकार।।

श्री हनुमान जी की पूजा करके उपयुक्त दोहे का एक माला (108 बार) प्रतिदिन जाप करें। इससे बुद्धि एवं स्मरण शक्ति में वृद्धि होगी।

गुरु गृह गये पढ़न रघुराई।
अल्प काल विद्या सब आई।।

इस चौपाई का प्रतिदिन एक माला (108 बार) जाप करके विद्यालय जाने से निश्चय ही परीक्षा में सफलता प्राप्त होगी।

लाल किताब के अनुसार, जो बच्चे पढ़ने में कमजोर हैं, उन्हें हरे रंग की तुरमली चाँदी की अंगुठी

या नेकलेस में पहनने से लाभ हो सकता है।

बृहस्पतिवार को पीले कपड़े मे 7 हल्दी की गांठें और बेसन के लड्डू बांधकर नदी में प्रवाहित करनेसे परीक्षा में अवश्य सफलता प्राप्त होगी।

'ऊँ नमः शिवाय' का जाप करके लाल धागे में दो पाँच मुखी रूद्राक्ष के बीच में एक छेद मुखी रूद्राक्ष को शिवलिंग से स्पर्श कराके धारण करें।

'ऊँ गंग गणपतेः नमः' नामक मंत्र को ग्यारह बार परीक्षा आरम्भ होने से पूर्व जाप करें, परिणाम आपके पक्ष में होगा।

परीक्षा देने जाते समय किसी धार्मिक स्थान में आधा लीटर दूध दान करना उपयोगी साबित हो सकता है।

लाल किताब के अनुसार, यदि आपकी संतान पढ़ने में कतरा रहा हो, या स्कूल ना जाने के लिए बहाने बनाती हो, या हठ करती हो, तो तांबे का एक चौकोर टुकड़ा सफेद धागे में बांधकर उसके गले में पहनायें।

'श्री कृष्ण प्रसंग' नामक मंत्र को पूष्य नक्षत्र या किसी शुभ दिन को लाल कलम से 17 बार सफेद पन्ने पर लिखकर परीक्षा के दौरान अपने जेब में रखें।

स्वास्थ्य से संबंधित महत्वपूर्ण योग और उपाय –

आपकी कुण्डली में मंगल पहले भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, इस स्थिति के कारण आपको सिर पर चोट लग सकती है।

आपकी कुण्डली में बुध आठवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपको दाँतों और नाड़ियों से संबंधित रोग होने की संभावना होगी। आपको निम्न उपाय करना चाहिए– घर में पूजा के स्थान को ना बदलें। मिट्टी के बर्तन में गुड़ भरकर बुधवार के दिन जंगल में दबायें।

आपकी कुण्डली में बुध आठवें भाव में बैठा हुआ है और बारहवां भाव खाली है। लाल किताब के अनुसार, आपको खून से संबंधित असाध्य रोग होने की संभावना हो सकती है।

आपकी कुण्डली में केतु तीसरे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, यदि आपको कान, रीढ़ की हड्डी, फोड़े–फुंसियां और पांव से संबंधित रोग होता है, तो आपको कानों में सोने की बाली पहनना चाहिए।

आपकी कुण्डली में शुक्र दसवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, यदि आप अपना चरित्र

ठीक नहीं रखते हैं, तो आपकी पत्नी पर इसका बुरा प्रभाव पड़ सकता है।

आपकी कुण्डली में सूर्य और राहु एक साथ स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, आपको चर्म–रोग हो सकते हैं। गाय या बकरी का दान करें।

आपकी कुण्डली में सूर्य और राहु नौवें भाव में स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, आपको गले से संबंधित बीमारी लग सकती है। उपाय के तौर पर जौ को दूध से धोकर बहते हुए पानी प्रवाहित करें।यदि आपके घर में कोई ना कोई हमेशा रोग ग्रस्त रह रहा है, बीमारी जाने का नाम नहीं ले रहा है, तो आपके घर में जितनी रोटी बनती है, उसमें चार मीठी रोटी जोड़कर महीने में एक बार अमावस्या या संक्रांति के दिन काले कौए, काली गाय या कुत्ते को खिलाना चाहिए, अथवा महीने मेंएक बार अन्दर से खोखले कद्दू को किसी धार्मिक स्थल पर दान करना चाहिए, अथवा रात को रोगी के सिरहाने एक, दो या पाँच रूपये का सिक्का रखकर प्रातः काल सफाई कर्मचारी को दान करें, अथवा यदि आप श्मशान से गुजर रहे हैं, तो एक या दो रूपये के सिक्के वहां जरूर फेंके।

धन, ब्यापार और रोजगार से संबंधित महत्वपूर्ण योग और उपाय –

आपकी कुण्डली में, बृहस्पति दसवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपको दिमागी कार्य के स्थान पर मेहनत मजदूरी वाले कार्य करना चाहिए।

आपकी कुण्डली में, मंगल पहले भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपको मकान के निर्माण में प्रयुक्त होने वाली सामग्री के व्यापार से लाभ होगा।

आपकी कुण्डली में, सूर्य राहु, केतु अथवा शनि के साथ स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपको अपने जीवन में धन की कमी महसूस होगी।

आपकी कुण्डली में, बृहस्पति और शुक्र एक साथ स्थित हैं। लाल किताब में इसको दिखावे का धनकी संज्ञा दी गई है।

आपकी कुण्डली में, राहु–सूर्य, राहु–चंद्रमा, केतु–सूर्य या केतु–चंद्रमा एक साथ स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, आपको नौकरी और आर्थिक मामलों में कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है।

आपकी कुण्डली में, बृहस्पति के शत्रु ग्रह दसवें भाव में स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, आपकोधन हानि हो सकती है।

आपकी कुण्डली में, बृहस्पति दसवें भाव में एवं सूर्य या चंद्रमा छठे भाव में और दूसरा भाव खाली है। लाल किताब के अनुसार, आप छोटे–छोटे कार्यों से धनवान बनेंगे।

आपकी कुण्डली में, चंद्रमा छठे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपको यात्रा में काम

आने वाली वस्तुओं के व्यापार, ट्रेवल एजेन्सी के कार्य से लाभ होगा।

आपकी कुण्डली में, मंगल पहले भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपको फर्नीचर इत्यादि के कार्यों से लाभ प्राप्त होगा।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति दसवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, यदि आप शिक्षा से संबंधित कार्यों में लगे हैं, अथवा सोना, चाँदी, कपड़े आदि का व्यापार करते हैं, तो लाभ की स्थितिमें रहेंगे।

आपकी कुण्डली में शुक्र दसवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, यदि आप रूई का व्यापार करते हैं अथवा ट्रान्सपोर्ट चलाते हैं, तो आपकी स्थिति सुदृढ़ होगी।

मकान से संबंधित महत्वपूर्ण योग, सावधानियाँ और उपाय –

यदि आपके मकान का मुख्य दरवाजा दक्षिण की तरफ है और मकान से बाहर निकलते समय सीधेहाथ पर रसोई और सामने स्नानघर या पानी का स्थान हो तो आपको कोई ना कोई कष्ट हो सकता है। धन हानि की भी संभावना है।

यदि आपके मकान पर किसी पेड़ की छाया पड़ रही है, तो यह मंगल के शुभ प्रभाव को नष्ट कर देता है।

यदि आपके मकान की दीवार के पास कटा और सूखा पीपल का पेड़ है, तो आपके परिवार और धन संपत्ति पर इसका बुरा असर पड़ेगा। मंगल का प्रभाव अशुभ हो जायेगा।

आपकी कुण्डली में शुक्र दसवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, यदि आप अपने मकान के पश्चिमी दीवार को मिट्टी का रखें, अथवा वहां पर बकरी पालें– तो आपको धन की कमीनहीं होगी।

आपकी कुण्डली में शनि तीसरे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, यदि आपके मकान का मुख्य दरवाजा दक्षिण और पूर्व की ओर है, तो यह आपके लिए नुकसानदायक होगा। आपको मकान के साथ पत्थर नहीं गाड़ना चाहिए। मकान की नींव खोदने से पहले कुत्ते–कुतिया का जोड़ापालना चाहिए, तभी ऐसा मकान बनेगा।

आपकी कुण्डली में केतु तीसरे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपको दक्षिणमुखी मकान में नहीं रहना चाहिए।

आपकी कुण्डली में, बृहस्पति और शुक्र एक साथ स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, आपके पास मकान होगा, परन्तु धन की कमी रहेगी। बृहस्पति या केतु का उपाय

करें।

यदि आपका मकान बंद गली के अन्तिम सिरे पर स्थित है, और उसमें हवा सीधे आती है, तो आपके संतान पर इसका बुरा प्रभाव हो सकता है। ऐसे मकान में कभी ना रहें।

यदि आपके मकान पर किसी धार्मिक स्थल आदि की छाया पड़ रही है, तो घर में बीमारियां परेशानकरती रहेंगी।

रसोई घर में खाना बनाने का चुल्हा और बर्तन धोने का स्थान एक ही प्लेटफार्म पर नहीं होना चाहिए, अन्यथा घर में कलह होती रहेगी। उपाय के तौर पर इन दोनों स्थानों के मध्य पंचमुखी हनुमान का चित्र लगायें।

घर के अन्दर यदि लोहे की चारपाई हो, तो पूर्व–दक्षिण दिशा में बिछायें।

घर के मालिक को दक्षिण–पश्चिम के कोने में सोना चाहिए।

यदि आपके मकान का मुख्य द्वार दक्षिण दिशा में है, तो वास्तु शास्त्र के अनुसार, स्त्रियों के लिए हानिकारक होगा। ऐसे मकान में केवल विधुर पुरूष ही सुखपूर्वक रह सकते हैं। यदि आप मुख्य द्वार पर तांबे की कील गाड़े, तो स्थिति सुखद हो सकती है। चाँदी की चौड़ी पत्ती दरवाजा के एककोने से दूसरे कोने तक बिछा सकते हैं। घर पर मिट्टी का बंदर रखें, जिसका मुहं दक्षिण दिशा की ओर हो। बकरी का दान करें। दिन के दो बजे के बाद साबूत मूंग की दाल किसी धार्मिक स्थल पर दान करें।

यदि आपके मकान में कोई मिट्टी वाला स्थान नहीं है, तो यह परिवार की स्त्रियों के लिए हानिकारक हो सकता है और धन सम्पत्ति पर भी बुरा असर हो सकता है। निम्न उपाय करने से स्थिति सुखद हो सकती है। मिट्टी की बनी हुई औरत की मूर्ति घर में रखें। सफेद रूमाल में कपूरकी टिकिया, देशी घी और रूई बांधकर रखें। घर में छोटे–मोटे कार्य करने के लिए नौकरानी रखें।

यदि आपके मकान में धन रखने के लिए तिजोरी, आला या तहखाना बना हुआ है, तो उसे बिल्कुलखाली ना रखें। बादाम अथवा छुआरे रख सकते हैं।

यदि आपके मकान में कोई अंधेरी कोठरी है, तो उसमें रोशनी के लिए रोशनदान ना खोलें।

यदि आपको अपने घर की छत बदलनी है, तो पहले एक अस्थाई छत पुरानी छत के ऊपर बनायें।

लाल किताब के अनुसार, घर के मुख्य द्वार से बाहर निकलते समय सीधे हाथ की तरफ पानी का स्थान और उलटे हाथ की तरफ या पीठ की तरफ रसोई होना उत्तम होता है।

यदि आपके मकान पर पीपल इत्यादि की छाया पड़ रही है, तो यह आपके तरक्की के लिए नुकसानदायक हैं। आपको उस पीपल की जड़ में जल चढ़ाना

चाहिए।

यदि आपके मकान के आस–पास कुआं है, तो उसमें भूलकर भी कुड़ा–करकट ना डालें। प्रतिदिन उसमें दूध डालने से आपकी उन्नति होगी।

घर के अन्दर किकर का पेड़ ना लगायें।

मकान या प्लाट का मुख्य द्वार उत्तर–पूर्व या पूर्व दिशा में होना चाहिए।

आपकी चंद्र राशि– वृष, कन्या या मकर है। आपके मकान का मुख्य द्वार दक्षिण दिशा में भी हो, तोआपको कोई हानि नहीं होगी।

लाल किताब के अनुसार, सफेद रंग या पेन्ट का प्रयोग मकान में सभी जगह किया जा सकता है।नीले रंग या पेन्ट का प्रयोग शयन कक्ष या कान्फेंस हाल में करें।

हरे या क्रीम रंग का प्रयोग अध्ययन कक्ष में करें।

गुलाबी या संतरे रंग का प्रयोग भोजनालय में करें। पुलिस या मिलिट्री के स्थान पर लाल रंग का प्रयोग करें।

यदि आपके मकान का मुख्य द्वार पूर्व दिशा की ओर है, तो उसमें सफेद रंग का प्रयोग करें।

यदि आपके मकान का मुख्य द्वार दक्षिण दिशा में है, तो उसमें लाल, गुलाबी या संतरे रंग का प्रयोग करें।

यदि आपके मकान का मुख्य द्वार उत्तर दिशा में है, तो उसमें हरे या पीले रंग का प्रयोग करें।

यदि आपके मकान का मुख्य द्वार पश्चिम दिशा में है, तो उसमें नीले या हल्के रंग का प्रयोग करें।

यदि आपके मकान का मुख्य द्वार दक्षिण–पूर्व दिशा में है, तो मकान में हरे रंग का प्रयोग करें।

यदि आपके मकान का मुख्य द्वार दक्षिण–पश्चिम दिशा में है, तो मकान में हरे रंग का प्रयोग करें।

यदि आपके मकान का मुख्य द्वार उत्तर–पश्चिम दिशा में है, तो आपको अपने मकान में सफेद रंग का प्रयोग करना चाहिए।

आपको अपने मकान का मुख्य द्वार मकान के कम चौड़ाई वाले हिस्से में रखना चाहिए। यदि आपकेमकान का मुख्य द्वार दो पल्लों का है, तो यह आपको अधिक लाभकारी होगा। यदि मुख्य द्वारअन्दर की तरफ खुलता है, तो यह अधिक लाभकारी होगा।

आपको अपने मकान के उत्तर और पूर्व दिशा में दक्षिण और पश्चिम दिशा से अधिक खुला स्थान रखना

चाहिए।

आपको अपने मकान की दक्षिण और पश्चिम की दीवार ज्यादा मोटी और ज्यादा ऊँची रखनी चाहिए।

मकान की छत की ढलान उत्तर, पूर्व या उत्तर–पूर्व में होनी चाहिए।

अपने घर के प्रत्येक कमरे का उत्तर–पूर्व वाला कोना खाली रखें।

मकान में बरामदा और खुली छत उत्तर और पूर्व में होनी चाहिए।

मकान में बालकनी उत्तर और पूर्व में होना चाहिए। बेसमेन्ट उत्तर–पूर्वी भाग में होनी चाहिए।

यदि मकान में पत्थर की मूर्ति लगा रहे हैं, तो उसे दक्षिण–पश्चिम दिशा में लगायें।

मकान के दक्षिण–पश्चिम वाले हिस्से में सम संख्या में वृक्ष लगायें।

मकान में तुलसी जी का पौधा पूर्व, उत्तर या उत्तर–पूर्व में लगायें।

मकान में खिड़कियों की संख्या उत्तर और पूर्व दिशा में अधिक होनी चाहिए। दरवाजे और खिडकियोंकी संख्या सम होनी चाहिए, परन्तु संख्या का अन्त 10, 20 इत्यादि से नहीं होना चाहिए।

मकान में सीढ़ियां दक्षिण, पश्चिम या ईशान कोण को छोड़कर कहीं भी बनाई जा सकती हैं। सीढ़ियों की संख्या विषम होनी चाहिए। सीढ़ियों का घुमाव दक्षिणावर्ती होना चाहिए।

यदि आप अपने मकान में पानी का हौज बनवा रहे हैं, तो उसे उत्तर–पूर्व में बनवायें, यह काफी लाभदायक होगा।

यदि आप छत पर पानी की टंकी रखवा रहे हैं, तो उसे उत्तर–पश्चिम दिशा में रखवायें। टंकी का रंग काला अथवा नीला हो तो बढ़िया रहेगा।

मकान में पूजा का स्थान ईशान, पूर्व या उत्तर दिशा में होना चाहिए। भगवान की मूर्ति का मुख उत्तर या पूर्व की ओर रखें। पूजा घर का आकार पिरामिड जैसा रखें। पूजा घर के फर्श का रंग सफेद या हल्का पीला होना चाहिए। पूजा घर के दीवारों का रंग क्रीम, सफेद या हल्का नीला रखें।

मकान में रसोई घर दक्षिण–पूर्व दिशा में होना चाहिए। खाना बनाते समय अपना मुख पूर्व की ओर रखें। रसोई घर की खिड़कियां पूर्व और दक्षिण दिशा में होनी चाहिए।

मकान में भोजनकक्ष पश्चिम दिशा में रखें। खाने की मेज आयताकार या वर्गाकार होनी चाहिए।

मकान में स्नानागार पूर्व, उत्तर या उत्तर–पश्चिम भाग में

रखें।

मकान का शौचालय दक्षिण दिशा में होना चाहिए।

आपकी कुण्डली में, शनि तीसरे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, यदि आप मकान बनवाते हैं, तो उसका मुख्य द्वार पूर्व या दक्षिण दिशा में नहीं होना चाहिए। यदि आप मकान बनाते समय नीवं खोदने के साथ ही कुत्ते–कुत्तिया के जोड़े को पालते हैं, तो मकान निर्विघ्न बनेगा।

विवाह, स्त्री और गृहस्थ–सुख से संबंधित महत्वपूर्ण योग और उपाय –

आपकी कुण्डली में, चंद्रमा छठे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, 24वें और 25वें वर्ष में विवाह ना करें, अन्यथा आपकी माता और जीवनसाथी में हमेशा अनबन रहेगी।

आपकी कुण्डली में, सूर्य शुभ भावों में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपकी स्त्री सुन्दर, सुघड़ और शिक्षित होगी।

आपकी कुण्डली में शुक्र पहले, दूसरे, आठवें, दसवें या ग्यारहवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपके जीवनसाथी की उम्र लंबी होगी।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति दसवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, यदि आप विवाहेत्तर संबंधों में विश्वास रखते हैं, तो आपको हमेशा धन की कमी रहेगी।

आपकी कुण्डली में सूर्य–शुक्र, बृहस्पति–शुक्र, मंगल–चंद्रमा या मंगल–शुक्र की युति दूसरे भाव में है। लाल किताब के अनुसार, किसी स्त्री के कारण आपका धन नष्ट हो सकता है।शीघ्र विवाह हेतु– मंगल–पार्वती स्त्रोत का पाठ प्रतिदिन करें।

शीघ्र विवाह हेतु– स्नान के पश्चात कांसे की कटोरी में सरसों का तेल भरकर मुहुर्त देखकर छाया पात्र निकालें।

शीघ्र विवाह हेतु– पीले वस्त्र में चने की दाल बांधकर बृहस्पतिवार के दिन किसी मंदिर में दान करें।

यदि विवाह में अत्यधिक विलम्ब हो रहा है, तो वाल्मिकी रामायण के बाल–काण्ड के सर्ग 73 का 43 दिन तक लगातार पाठ करें।

शीघ्र विवाह हेतु दुर्गा सप्तशती के श्लोकों का पाठ 43 दिन तक लगातार करें।

शीघ्र विवाह हेतु सात सोमवार शिवलिंग पर दूध

चढ़ायें।

संतान सुख से संबंधित महत्वपूर्ण योग और उपाय –

आपकी कुण्डली में, शुक्र और बृहस्पति दसवें भाव में स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, आपका संतान पक्ष कमजोर हो सकता है या आपकी संतान आपको दुख पहुंचा सकती है।

आपकी कुण्डली में, शुक्र दसवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, यदि आप अपना चाल–चलन ठीक नहीं रखेंगे, तो आपको संतान की प्राप्ति में बाधायें आ सकती हैं।

आपकी कुण्डली में, शुक्र दसवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपको धार्मिक कार्यों मेंरूचि लेना चाहिए, अन्यथा संतान प्राप्ति में विलम्ब हो सकता है।

आपकी कुण्डली में, केतु तीसरे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपको दक्षिणामुखी मकान में नहीं रहना चाहिए, अन्यथा संतान प्राप्ति में कठिनाई आ सकती है।

आपकी कुण्डली में, राहु नौवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपको अपनी संतान के स्वास्थ्य के लिए काला कुत्ता पालना चाहिए।

आपकी कुण्डली में, बृहस्पति दसवें या बारहवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपके पिता को गंभीर बीमारी का सामना करना पड़ सकता है।

आपकी कुण्डली में, चंद्रमा या बृहस्पति अपने शत्रु ग्रहों के साथ स्थित है। लाल किताब के अनुसार,आपकी माता, दादी या सास की उम्र कम हो सकती है।

आपकी कुण्डली में, चंद्रमा पहले से छठे भाव के बीच स्थित है एवं बृहस्पति सातवें से बारहवें भाव के बीच स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपको अपनी माता का पूर्ण सुख प्राप्त होगा, एवं उनकी आयु लम्बी होगी। (यदि आप माता–पिता की प्रथम संतान हो तो)

आपकी कुण्डली में, चंद्रमा छठे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपको कन्या संतान अधिक होंगी।

यदि आप बंद गली के मकान में रहते हैं तो आपको संतान संबंधी परेशानियों का सामना करना पड़सकता है और नर संतान की प्राप्ति में विलम्ब हो सकता है। उपाय के तौर पर आपको बृहस्पतिवार से लगातार 43 दिन तक प्रतिदिन केसर का तिलक लगाना चाहिए।

यदि आप संतान संबंधी समस्या से ग्रस्त हैं, तो आपको अपने घर में हरिवंश पुराण या महाभारत

का पाठ करना चाहिए।

यदि आप कुत्ते के नर संतान को अपने घर में रखते हैं, तो आपको संतान अवश्य होगी।

संतान की प्राप्ति के लिए गणेश जी की पूजा करना लाभदायक होता है।

यदि आपको संतान संबंधी कोई समस्या है, तो काले कुत्ते की सेवा करना या उसे अपने घर पर रखकर खाना खिलाना आपके लिए फायदेमंद रहेगा।

यदि किसी स्त्री को संतान हो, परन्तु जीवित ना रहे, तो लाल किताब में ऐसी स्थिति से बचाव के लिए बहुत ही साधारण और सफल उपाय बताया गया है– स्त्री के गर्भवती होने पर उसके बाजु परलाल धागा बांध दें और संतान होने के पश्चात उस धागे को नवजात शिशु के बाजु पर बांध दें और स्त्री को नया लाल धागा पुनः बांधें। स्त्री के बाजु पर 18 महीने तक बंधा रहना चाहिए।

लाल किताब के अनुसार, यदि किसी स्त्री का बार–बार गर्भपात होता है, तो काला धागा उसकी कमर में बांधें और संतान के जन्म के बाद यह धागा संतान के बाजु पर बांधें।

लाल किताब के अनुसार, यदि किसी की संतान जीवित नहीं रहती है, तो संतान के जन्मदिन पर मिठाई की जगह नमकीन खाद्य पदार्थ वितरण करना चाहिए।

लाल किताब के अनुसार, प्रसव के समय स्त्री को शारीरिक कष्ट से बचाने और नवजात शिशु के स्वास्थ्य के लिए प्रसव पीड़ा के समय दो पीतल के बर्तन लेकर एक में मीठी वस्तु और दूसरे में दूध भर के स्त्री के हाथ से स्पर्श करवाकर रखना चाहिए, और शिशु के जन्म के बाद से किसी धार्मिक स्थान में दान करना चाहिए।

लाल किताब के अनुसार, यदि किसी की नर संतान जीवित न रहती हो, तो उन्हें किसी धार्मिक स्थान में शिशु को जन्म देना चाहिए।

लाल किताब के अनुसार, यदि संतान को कष्ट हो, तो गाय, कौए अथवा कुत्तों को अपने भोजन का एक हिस्सा दें।

लाल किताब के अनुसार, यदि आपके घर में एक छत को ढक कर मकान बनाया गया हो, तो संतान होने की संभावना क्षीण होगी।

लाल किताब के अनुसार, आपके घर में कुएं को ढक कर मकान बनाया गया हो, तो संतान होने की संभावना क्षीण होगी।

विदेश यात्रा और भ्रमण से संबंधित महत्वपूर्ण योग और उपाय –

आपकी कुण्डली में, शनि तीसरे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, कई बार विदेश यात्रा के दौरान आपको अनेक प्रकार के कष्ट हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में, केतु तीसरे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपको अपने कार्य के सिलसिले में अत्यधिक यात्रायें करनी पड़ेंगी। विदेश यात्रा भी हो सकती है।

लाल किताब में अन्य महत्वपूर्ण फलादेश

(सभी भविष्यफल लाल किताब चन्द्र कुण्डली पर आधारित हैं)

अन्धे ग्रहों की कुण्डली

लाल किताब के अनुसार, यदि किसी कुण्डली के दसवें भाव में दो आपस में शत्रु ग्रह में बैठ जायें, तो ऐसीकुण्डली को अंधे ग्रहों की कुण्डली (टेवा) कहते हैं। कुण्डली में दसवां भाव जातक का कर्म स्थान है, इस घर का जातक की कमाई से संबद्ध है, इसलिए ऐसे भाव में दो या दो से अधिक परस्पर शत्रुता वाले ग्रह बैठ जायें तो, जातक के कर्मक्षेत्र में असंतुलन की स्तिथि पैदा हो जाती है। जातक की नौकरी या व्यापार में स्थिरता नहीं आ पाती है। दसवें भाव में बैठे अंधे हो चुके ग्रहों को ठीक करने के लिए दस अंधोंको भोजन कराना चाहिए।

निष्कर्ष– आपकी कुण्डली के दसवें भाव में दो या दो से अधिक ग्रह स्थित हैं, जो आपस में शत्रु हैं। लाल किताब के अनुसार, आपकी कुण्डली अंधे ग्रहों की कुण्डली (टेवा) है।

आधे अन्धे ग्रहों की कुण्डली

लाल किताब के अनुसार, यदि चौथे भाव में सूर्य और सातवें भाव में शनि स्थित हों तो ऐसी कुण्डली को आधे अंधे ग्रहों की कुण्डली कहते हैं। इस ग्रह की स्थिति का जातक की मानसिक स्थिति और व्यवसायिकजीवन पर अशुभ असर होगा। जातक की मानसिक शांति में काफी कमी आ सकती है। चौथा भाव हमारे सुख का भी घर है, इस ग्रह स्थिति के कारण गृहस्थ सुख में कमी आने की संभावना होती है।

निष्कर्ष– आपकी कुण्डली आधे अंधे ग्रहों की कुण्डली (टेवा) नहीं है।

धर्मी कुण्डली

लाल किताब के अनुसार, यदि कुण्डली में राहु या केतु 4थे भाव में या चन्द्रमा के साथ अथवा शनि 11वें भाव में या बृहस्पति के साथ बैठा हुआ है, तो ऐसी कुण्डली को धर्मी कुण्डली (टेवा) कहते हैं। ऐसे जातक के जीवन में कभी भी कोई बड़ी समस्या नही आ सकती है, जो कि जीवन में उथल–पुथल मचा दे। किसी बहुत मुश्किल या कष्ट के समय उसे कहीं न कहीं से दैवीय सहायता प्राप्त हो जाएगी।

निष्कर्ष– यह कुण्डली धर्मी कुण्डली (टेवा) नहीं है।

नाबालिक कुण्डली (टेवा)

लाल किताब के अनुसार, यदि कुण्डली के पहले, चौथे, सातवें और दसवें भाव (केन्द्र स्थान) में कोई भी ग्रहनहीं बैठा हुआ है या उनमें केवल बुध बैठा हुआ है, तो ऐसी कुण्डली, नाबालिक टेवा (कुण्डली) कहलातीहै। इस स्थिति में जातक की किस्मत बारह साल तक शक के दायरे में होती है।

लाल किताब के अनुसार, नाबालिक टेवा वाले जातक पर बारह वर्षों तक प्रत्येक वर्ष एक–एक ग्रह का प्रभाव अग्रलिखित रूप में पड़ेगा। जीवन पर पड़ने वाले दुषित प्रभाव की अनुकूलता हेतु निम्नांकित भाव स्थित ग्रह का उपाय करना चाहिए।

1– उम्र के पहले साल में सातवें भाव के ग्रह का असर पड़ता है।

2– उम्र के दूसरे साल में चौथे भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
3– उम्र के तीसरे साल में नौवें भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
4– उम्र के चौथे साल में दसवें भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
5– उम्र के पांचवें साल में ग्यारहवें भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
6– उम्र के छठें साल में तीसरे भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
7– उम्र के सातवें साल में दूसरे भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
8– उम्र के आठवें साल में पांचवें भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
9– उम्र के नौवें साल में छठे भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
10– उम्र के दसवें साल में बारहवें भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
11– उम्र के ग्यारहवें साल में पहले भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
12– उम्र के बारहवें साल में आठवें भाव के ग्रह का असर पड़ता है।

निष्कर्ष– यह कुण्डली (टेवा) नाबालिक टेवा नहीं है।

लाल किताब में राजयोग

लाल किताब में राजयोग का यह मतलब नहीं है, कि ऐसा जातक कोई बड़ा राजा, प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति ही हो, अपितु राजयोग से कुण्डली में यह संकेत मिलता है, कि जातक के रहन–सहन का स्तर राजाओं की तरह जरूर हो सकता है।

आपकी कुण्डली में राजयोग की कोई भी स्थिति लागू नहीं हो रही है।

लाल किताब में ऋण – लक्षण और उपाय

आपकी कुण्डली में कोई ऋण लागू नहीं हो रहा है।

लाल किताब में वर्जित और अवर्जित उपाय

(1) आपकी कुण्डली में, राहु नीच का है, आपको राहु से संबंधित वस्तुओं का दान नहीं लेना चाहिए।

(2) आपकी कुण्डली में, केतु नीच का है, आपको केतु से संबंधित वस्तुओं का दान नहीं लेना चाहिए।

(3) आपकी कुण्डली में चंद्रमा छठे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपको आम लोगों के फायदे के कार्य, जैसे तालाब या कुआं खुदवाना, पानी पीने के लिए प्याउ लगवाना अथवा कुओं या तालाबोंकी मरम्मत करवाना जैसे कार्य नहीं करना चाहिए। इससे आपको संतान से संबंधित परेशानियां हो सकती हैं, और यह भी संभव है कि आपको संतान ही ना हो।

(4) आपकी कुण्डली में बुध तीसरे, आठवें, नौवें या बारहवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपको अपने घर में चौड़े पत्तों वाले पौधे जैसे मनी प्लांट इत्यादि नहीं लगाना चाहिए, अन्यथा आपके स्वास्थ्य पर इसका बुरा प्रभाव पड़ेगा।

(5) आपकी कुण्डली में शनि पहले, तीसरे, पांचवें, छठें या आठवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपको गैस, तेल, डीजल, पेट्रोल, सड़क निर्माण, भवन निर्माण, लोहे का कार्य आदि से बचना

चाहिए, अन्यथा आपको घाटा हो सकता है।

(6) यदि आपके घर के आखिरी में अंधेरी कोठरी है, जिसमें दरवाजे के अतिरिक्त रोशनी आपने के लिए कोई भी जगह नहीं है, तो उसमें रोशनी के लिए रोशनदान या खिड़की नहीं खोलनी चाहिए, अन्यथा आपकी संतान पर इसका बुरा असर पड़ सकता है।

किसी कारणवश ऐसी कोठरी की छत बदलवानी पड़े तो पुरानी छत को गिराने से पहले उस कोठरी के उपर नई छत डलवा लें।

(7) यदि आपके घर में सोने–चांदी के गहनों या रूपये–पैसे रखने के लिए सेफ, आलमारी, तिजोरी इत्यादिहै, तो उसे कभी भी पूरी तरह खाली नहीं रखें।

(8) अपने मकान के कुछ हिस्सों में मिट्टी वाला स्थान अवश्य रखें।

(9) दक्षिणमुखी मकान में ना रहें।

(10) झूठ ना बोलें।

(11) झूठी गवाही ना दें।

(12) अपशब्द ना बोलें।

(13) किसी को गाली न दें।

(14) क्रूरता न करें।

(15) ईश्वर पर विश्वास रखें।

(16) देवी–देवताओं की उपासना श्रद्धापूर्वक करें।

(17) मांस–मछली ना खायें।

(18) शराब का सेवन ना करें।

(19) कपड़े सलीके से पहनें।

(20) कान–नाक छिदवायें।

(21) दांत साफ रखें।

(22) संयुक्त परिवार में रहें।

(23) ससुराल से मधुर संबंध बनाकर

रखें।

(24) कन्याओं की पूजा करें। उन्हें हरे वस्त्र, उत्तम भोजन आदि देकर प्रसन्न रखें।

(25) बहन–बेटी को मीठी वस्तुओं का उपहार दें।

(26) जिस प्रकार माता की सेवा करते हैं, उसी प्रकार जीवनसाथी का भी उचित देखभाल करें।

(27) भाभी (बड़े भाई की जीवनसाथी) की सेवा करें।

(28) परिवार के सदस्यों का पालन करें।

(29) मुफत में किसी से कुछ ना लें।

(30) निःसंतान की संपत्ति ना लें।

(31) बड़ों के चरण स्पर्श करके आशीर्वाद प्राप्त करें।

(32) यथा संभव दक्षिणमुखी मकान में ना रहें।

(33) घर की छत में छेद ना रखें।

(34) घर में थोड़ी बहुत कच्ची जगह अवश्य रखें।

(35) विकलांगों को भोजन दें, उनकी सहायता करें।

(36) पड़ोस में कोई असहाय विधवा हो, तो उनकी सहायता करें।

(37) मनुष्येत्तर जीवों– गाय, कुत्ता, कौवा, बन्दर आदि को भोजन दें।

(38) काने और गंजे आदमी से सावधान रहें।

(39) नाक को हमेशा साफ रखें।

लाल किताब में एक साथ बैठे ग्रहों का फल

(सभी भविष्यफल लाल किताब चन्द्र कुण्डली पर आधारित हैं)

आपकी कुण्डली में सूर्य और राहु एक साथ नौवें भाव में स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, यह अति अशुभ युति है। आपकी 42 वर्ष की आयु में राहु आपकी संतान को कष्ट पहुंचा सकता है। आपको धन की हानि हो सकती है। आपको सरकारी कार्यों में समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। यदि आप अशुभता को दूर करने के लिए उपाय भी करते हैं, तो राहु का समय पूर्ण होने के बाद ही सूर्य अपना पूर्ण प्रभाव देगा। सूर्य का प्रभाव आपके लिए शुभ होगा। अशुभ प्रभाव मिलने पर आपके विचार कलुषित और द्वेषपूर्ण हो सकते हैं। आपके घर में चोरी हो सकती है या आपको आर्थिक नुकसान हो सकता है, जिससे आपकी स्थिति खराब हो सकती है। ऐसा होने पर आप एक कपड़े में जौ के थोड़े दाने बांधकर घर के अंधेरे हिस्से में किसी वजनदार चीज से दबाकर रख दें। यदि आप अस्वस्थ है या आपको बुखार आता हो, तो आप जौ को गोमूत्र से धोकरनदी में बहा दें। राहु से संबंधित चीजें, जैसे बादाम, नारियल को बहते पानी में प्रवाहित करें। तांबे के सिक्के को रात्रि में आग में तपाकर सुबह बहते पानी में प्रवाहित करें। सिक्का प्रवाहित करने के तुरन्त बाद आपको पुत्र और नजदीकी संबंधियों के सामने नहीं जाना चाहिए– उन पर सूर्य और राहु का अशुभ प्रभाव हो सकता है।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति और शुक्र एक साथ दसवें भाव में स्थित हैं। यह युति रोगों और कष्टोंसे आपकी रक्षा करेगी। दोनों ग्रहों का संयुक्त प्रभाव 32 वर्ष की आयु तक रहेगा। विपरीत लिंगी व्यक्तियों से आपको सहायता प्राप्त होगी। आप अपने पूर्वजों के धन का लाभ प्राप्त नहीं कर सकते हैं। स्वयं के द्वारा अर्जित धन से ही आपको लाभ होगा। आपको पहले बृहस्पति और बाद मेंशुक्र का शुभ या अशुभ फल मिलेगा। आपके नास्तिक होने पर भी धन का आवागमन होता रहेगा।इस युति के अशुभ होने पर आपका विपरीत लिंगी व्यक्तियों की तरफ अधिक झुकाव हो सकता है और आप विलासी हो सकते हैं। आपमें संतान पैदा करने की शक्ति क्षीण हो सकती है। आपको संतान के जन्म से ही दुख प्राप्त हो सकते हैं। आपके माता–पिता को कष्ट हो सकता है। भाइयों से आपके संबंध मधुर नहीं हो सकते हैं। आप दूसरों के दुखों को दूर करने के चक्कर में निर्धन हो सकते हैं। 13 से 15 वर्ष की आयु में विपरीत लिंगी व्यक्तियों से संबंध आपके स्वास्थ्य को खराब कर सकते हैं।

आपकी कुण्डली में, शनि और केतु एक साथ तीसरे भाव में स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, यह युति शुभ परिणाम प्रदान करती है। इसमें शनि की प्रमुख भूमिका होती है। इस युति के किसी अन्य ग्रह से जुड़ने पर तीनों का प्रभाव मंद पड़ जायेगा। आपके भाग्य का निर्णय आपकी 18 वर्ष की आयु के बाद होगा। आपमें संतानोत्पत्ति की क्षमता अधिक होगी। आपको एक रंग का जानवर ही पालना चाहिए। एक से अधिक रंगो का (चितकबरा) जानवर पालने से शनि और केतु अशुभ हो जायेंगे। घोड़ा पालने से कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ेगा।

Sample

लाल–किताब वर्षफल

(18:12:2020 - 17:12:2021)

Ramesh Parbhakar

347/7 Red Rose Building

Shiv Mohalla Sangam Market

Ladwa, Kurukshtra- 136132

Contact - 9812560311, 9466960753

लाल किताब वर्षफल (चन्द्र कुण्डली)

वर्षफल कुण्डली –48

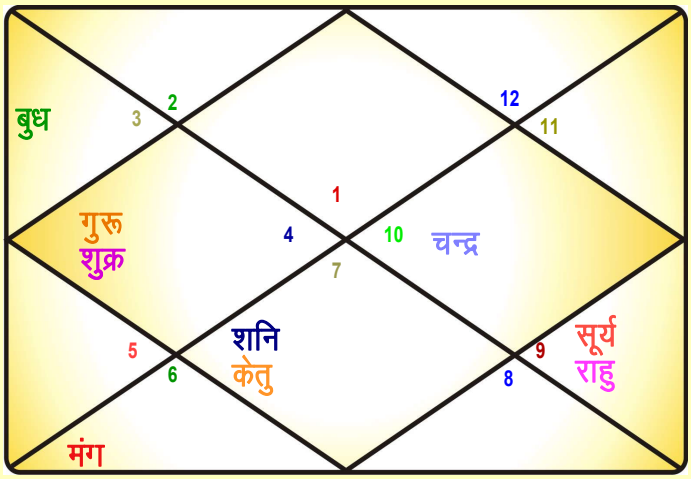

18:12:2020 -- 17:12:2021

लग्न कुण्डली

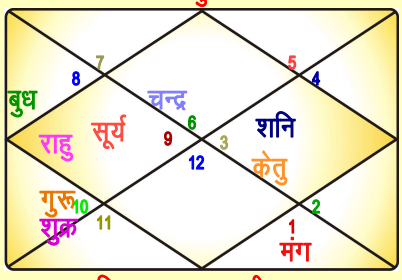

लाल किताब चन्द्र कुण्डली

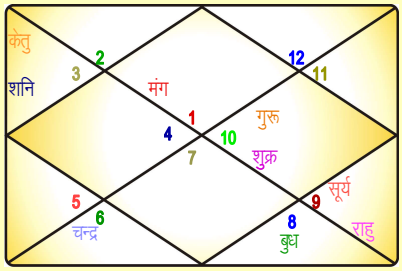

धोखे का ग्रह : सूर्य राहु , दसवें भाव में (चन्द्रमा) राशि नम्बर का ग्रह : चन्द्रमा

लाल किताब से वर्षफल में ग्रहों की स्थिति

ग्रह	भावस्थ	प्रभाव	पक्का घर	भाग्योदय का ग्रह	साथी ग्रह	कायम ग्रह	धर्मी	सोया	विशेष
सूर्य (बद)	नवम्	राशि						हाँ	शुभ भाव में
चन्द्रमा	दशम्	राशि						हाँ	अशुभ भाव में
मंगल	षष्टम्	राशि				हाँ		हाँ	
बुध (बद)	तृतीय	ग्रह		हाँ					अशुभ भाव में
गुरू	चतुर्थ	ग्रह							शुभ भाव में
शुक्र	चतुर्थ	राशि				हाँ			शुभ भाव में
शनि (बद)	सप्तम्	ग्रह				हाँ		हाँ	शुभ भाव में
राहु (बद)	नवम्	ग्रह						हाँ	अशुभ भाव में
केतु	सप्तम्	राशि						हाँ	अशुभ भाव में

लाल किताब से वर्षफल में भावों (खानों) की स्थिति

खाना न॰	खाना न॰	मालिक	पक्का घर	सोया	उच्च	नीच	किस्मत को जगाने
१		मंगल	सूर्य	हाँ	सूर्य	शनि	मंगल
२		शुक्र	गुरू	हाँ	चन्द्रमा		चन्द्रमा
३	बुध	बुध	मंगल		राहु	केतु	बुध
४	गुरू, शुक्र	चन्द्रमा	चन्द्रमा		गुरू	मंगल	चन्द्रमा
५		सूर्य	गुरू	हाँ			सूर्य
६	मंगल	बुध	बुध केतु		बुध राहु	शुक्र केतु	केतु
७	शनि, केतु	शुक्र	शुक्र बुध		शनि		शुक्र
८		मंगल	मंगल शनि	हाँ		चन्द्रमा	चन्द्रमा
९	सूर्य, राहु	गुरू	गुरू		केतु	राहु	शनि
१०	चन्द्रमा	शनि	शनि		मंगल	गुरू	शनि
११		शनि	शनि				गुरू
१२		गुरू	गुरू		शुक्र केतु	बुध राहु	राहु

चन्द्र कुण्डली वर्षफल (48) में ग्रहों की दृष्टि

18:12:2020 -- 17:12:2021

लाल किताब की सामान्य दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	गु0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य									
चन्द्रमा									
मंगल									
बुध	अर्द्ध							अर्द्ध	
गुरू		पूर्ण							
शुक्र		पूर्ण							
शनि									
राहु									
केतु									

ग्रहों की दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	गु0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य				0					
चन्द्रमा					0	0			
मंगल									
बुध	0							0	
गुरू		0							
शुक्र		0							
शनि	0				0	0		0	
राहु				0					
केतु				0					

लाल किताब में टक्कर की दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	गु0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य					0	0			
चन्द्रमा									
मंगल									
बुध		0							
गुरू									
शुक्र									
शनि									
राहु					0	0			
केतु									

लाल किताब में पाये की दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	गु0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य									
चन्द्रमा			0						
मंगल									
बुध									
गुरू									
शुक्र									
शनि				0					
राहु									
केतु				0					

लाल किताब में विश्वासघात की दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	गु0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य			0						
चन्द्रमा							0		0
मंगल				0					
बुध									
गुरू									
शुक्र									
शनि					0	0			
राहु			0						
केतु					0	0			

लाल किताब में सहचरी दिवार दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	गु0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य									
चन्द्रमा	0							0	
मंगल							0		0
बुध									
गुरू				0					
शुक्र				0					
शनि		0			0	0			
राहु									
केतु		0			0	0			

लाल किताब में अचानक प्रहार दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	गु0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य							0		0
चन्द्रमा					0	0			
मंगल					0	0			
बुध									
गुरू		0	0						
शुक्र		0	0						
शनि	0							0	
राहु							0		0
केतु	0							0	

लाल किताब में परस्पर सहयोग दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	गु0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य									
चन्द्रमा									
मंगल		0							
बुध							0		0
गुरू									
शुक्र									
शनि									
राहु									
केतु									

लाल किताब से वर्षफल

(सभी भविष्यफल लाल किताब चन्द्र कुण्डली पर आधारित हैं)

वर्ष पूर्ण – 48

(18:12:2020 - 17:12:2021)

नौवें भाव में स्थित सूर्य का फल

आपके वर्षफल कुण्डली सूर्य की अशुभता की मात्रा शुभता की मात्रा से अधिक है।

आपके वर्षफल में सूर्य की शुभता या अशुभता के कारण

आपकी कुण्डली में सूर्य अपने शत्रु राहु के साथ बैठा है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में सूर्य शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर नौवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, यदि आप लाटरी, सट्टा, शेयर आदि के कारोबार से जुड़े हुए हैं, तो यह वर्ष आपकेलिए शुभ नहीं है। आपको परदेश में कष्टपूर्ण स्थितियों में रहना पड़ सकता है। अपने पिता से आपके संबंध बिगड़ सकते हैं, परिवारजनों से जमीन-जायदाद की वजह से लड़ाई-झगड़ा हो सकता है।

वर्षफल में सूर्य का उपाय

सूर्य के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) अपने घर में खाने-पीने के लिए पीतल के बर्तन का प्रयोग करें।
(२) दूध, चांदी, चावल आदि वस्तुओं का दान न लें न दें।
(३) ज़्यादा गुस्सा न करें।

दसवें भाव में स्थित चन्द्रमा का फल

आपके वर्षफल कुण्डली चन्द्रमा की अशुभता की मात्रा शुभता की मात्रा से अधिक है।

आपके वर्षफल में चन्द्रमा की शुभता या अशुभता के कारण

आपकी कुण्डली में चन्द्रमा अशुभ भाव में बैठा है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में चंद्रमा शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर दसवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपको रक्त, दांत और कान से संबंधित रोग हो सकते हैं। आपको पैत्तृक संपत्ति नहीं बेचनी चाहिए। आपकी माता का स्वास्थ्य आपके लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। समाज में आपकी मान-प्रतिष्ठा में कमी आ सकती है।

वर्षफल में चन्द्रमा का उपाय

चन्द्रमा के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिएऔर सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) माता का चरणस्पर्श कर आशिर्वाद लें।
(२) रात में दूध का सेवन न करें।
(३) यदि डाक्टर हैं, तो मुफ्त में दवाई न दें।
(४) अपना चाल-चलन ठीक रखें।

छठवें भाव में स्थित मंगल का फल

आपके वर्षफल कुण्डली मंगल की शुभता की मात्रा अशुभता की मात्रा से अधिक है।

आपके वर्षफल में मंगल की शुभता या अशुभता के कारण

आपकी कुण्डली में मंगल कायम है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में मंगल शुभ स्थिति में छठे भाव में बैठा हुआ है। इस वर्ष आपके मित्रों की संख्या में वृद्धि हो सकती है। धार्मिक क्रिया-कलापों में आप बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेंगे। विदेशी संबंधों से आपको लाभ प्राप्त होगा। इस वर्ष आपका ईश्वर पर विश्वास भी बढ़ेगा। लिखने-पढ़ने से संबंधित कार्यों में आपको सफलता प्राप्त होगी। पैसों के लेन-देन के कारोबार से आपको बड़ी मात्रा में धन प्राप्त होगा। आपका जीवन संतों की तरह रहेगा।

वर्षफल में मंगल का उपाय

मंगल के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) नीम का वृक्ष लगायें।
(२) रात को सिरहाने पानी रखकर सुबह किसी पेड़ की जड़ में डालें।
(३) पितरों का श्राद्ध करें।
(४) अपने घर में ६ मन अनाज हमेशा रखें।

तीसरे भाव में स्थित बुध का फल

आपके वर्षफल कुण्डली बुध की अशुभता की मात्रा शुभता की मात्रा से अधिक है।

आपके वर्षफल में बुध की शुभता या अशुभता के कारण

आपकी कुण्डली में बुध अशुभ भाव में बैठा है।

आपकी कुण्डली में बुध शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर तीसरे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आप ज़्वर आदि से पीड़ित हो सकते हैं। आपको जुआ, सट्टा, लाटरी इत्यादि से इस वर्ष बचकर रहना चाहिए। इस वर्ष यात्रायें भी आपको अधिक फायदा नहीं पहुंचायेंगी। इस वर्ष आपको पारिवारिक कलह का सामना करना पड़ सकता है। आपकी बहन, बुआ, बेटी पर भी बुध का अशुभ असरहो सकता है। आपको जीभ से संबंधित रोग हो सकते हैं। यदि आप अपनी बहन, बुआ, या बेटी सेधन लेकर कोई व्यापार शुरू करते हैं तो उसमें आपको घाटा हो सकता है।

वर्षफल में बुध का उपाय

बुध के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) रात को हरी मूंग भिगोकर सुबह में उसे पक्षियों को खिलायें।
(२) फिटकरी से दांत साफ करें।
(३) दुर्गा पूजन करायें।
(४) ६ वर्ष से कम उम्र की कन्याओं को भोजन करायें, एवं उनका आशिर्वाद लें।
(५) दमा की दवाईयां मरीजों में मुफ्त बाटें।
(६) विधवा औरतों से संबंध न रखें।

चौथे भाव में स्थित गुरू का फल

आपके वर्षफल कुण्डली गुरू की अशुभता की मात्रा शुभता की मात्रा से अधिक है।

आपके वर्षफल में गुरू की शुभता या अशुभता के कारण

आपकी कुण्डली में गुरू अपने शत्रु बुध के साथ बैठा है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में बृहस्पति शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर चौथे भाव में बैठा हुआ है। लालकिताब के अनुसार, आपको गलत व्यसनों से इस वर्ष बच कर रहना होगा, अन्यथा शिक्षा अथवा शिक्षेणेत्तर कार्यों में अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। आपको अपने चाल-चलन पर भी विशेष ध्यान देना होगा। अपने पिता और दादा के साथ आपके संबंधों पर भी बुरा असर पड़ सकता है। आपकी माता का स्वास्थ्य आपके लिए चिन्ता का विषय बन सकता है।

वर्षफल में गुरू का उपाय

गुरू के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) किसी के सामने नंगे बदन न रहें।
(२) अपने घर में टूटे हुए खिलौने न रहने दें।
(३) पीपल के वृक्ष में पानी दें।
(४) गलत संगत से बचें।
(५) अपने कुल-पुरोहित की सेवा करें।
(६) किसी भी धार्मिक स्थान में चार किलो चने की दाल दान करें।

चौथे भाव में स्थित शुक्र का फल

आपके वर्षफल कुण्डली शुक्र की शुभता की मात्रा अशुभता की मात्रा से अधिक है।

आपके वर्षफल में शुक्र की शुभता या अशुभता के कारण

आपकी कुण्डली में शुक्र कायम है।
आपकी कुण्डली में शुक्र शुभ भाव में बैठा है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में शुक्र शुभ स्थिति में चौथे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपकी पारिवारिक सुख-सुविधाओं में वृद्धि होगी। अपने जीवनसाथी के अतिरिक्त दूसरी औरतों से भी आपके प्रेम संबंध बन सकते हैं। आपको अपने मामा अथवा मौसी से आर्थिक सहायता प्राप्त होगी। भूमि और भवन के मामलों में भी आप भाग्यशाली सिद्ध होंगे। आपके रहन-सहन के स्तर में भी वृद्धि होगी। आपको स्त्रियॉ भायेंगी तथा सौन्दर्य-वर्धक और सुगंधित वस्तुओं के व्यापार में काफी सफलता प्राप्त होगी।

वर्षफल में शुक्र का उपाय

शुक्र के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) आड़ू के गुठली में सूरमा भरकर जमीन में दबायें।
(२) अपना चाल-चलन ठीक रखें।
(३) इस वर्ष प्रेम विवाह न करें।
(४) घर की छत पर कीचड़ का लेप करें।

सातवें भाव में स्थित शनि का फल

आपके वर्षफल कुण्डली शनि की शुभता की मात्रा अशुभता की मात्रा से अधिक है।

आपके वर्षफल में शनि की शुभता या अशुभता के कारण

आपकी कुण्डली में शनि कायम है।
आपकी कुण्डली में शनि शुभ भाव में बैठा है।
आपकी कुण्डली में शनि अपने मित्र के पक्के घर में बैठा है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में शनि शुभ स्थिति में होकर सातवें भाव मे ंबैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष यदि आप जनहित में दूसरों की भलाई के कार्यों में ध्यान लगायेंगे तो आपके पास बड़ीमात्रा में धन आयेगा। इस वर्ष नया मकान बनने का योग है और आपको पैत्तृक संपत्ति की भी प्राप्तिहो सकती है। लोहा, कोयला, तेल, मशीनरी इत्यादि के व्यापार से आपको लाभ होगा। यदि आप राजनैतिक क्षेत्र में सक्रिय हैं, तो आपको किसी पद की भी प्राप्ति हो सकती है। आपके पारिवारिक एवं मानसिक सुख में भी वृद्धि होगी। आपके पिता, ससुर और जीवनसाथी के लिए भी यह वर्ष उत्तम है।

वर्षफल में शनि का उपाय

शनि के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) मिट्टी के बर्तन में शहद भरकर विराने में दबायें।
(२) बुरे लोगों की संगत न करें।
(३) डॉक्टर और केमिस्ट की संगत से बचें।
(४) काली गाय की सेवा करें।

नौवें भाव में स्थित राहु का फल

आपके वर्षफल कुण्डली राहु की अशुभता की मात्रा शुभता की मात्रा से अधिक है।

आपके वर्षफल में राहु की शुभता या अशुभता के कारण

आपकी कुण्डली में राहु अशुभ भाव में बैठा है।
आपकी कुण्डली में राहु अपने शत्रु सूर्य के साथ बैठा है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में राहु शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर नौवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपको इस वर्ष शत्रु परेशान करते रहेंगें। यदि आप सांस के रोगों से ग्रसित हैं तो यह वर्ष आपके लिए और भी बुरा हो सकता है। आपको इस वर्ष चोरी का कोई भी सामान नहीं खरीदना चाहिए। धार्मिक कार्यों में हिस्सा लेना आपके लिए लाभप्रद होगा।

वर्षफल में राहु का उपाय

राहु के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) आपको घर के अन्दर भट्ठी, पानी की टंकी नहीं बनवानी चाहिए।
(२) लड़ाई-झगड़ो से बचें।
(३) साधु-संतो की संगत करें।
(४) अपना चाल-चलन ठीक रखें।
(५) शरीर पर सोना धारण करें।

सातवें भाव में स्थित केतु का फल

आपके वर्षफल कुण्डली केतु की अशुभता की मात्रा शुभता की मात्रा से अधिक है।

आपके वर्षफल में केतु की शुभता या अशुभता के कारण

आपकी कुण्डली में केतु अशुभ भाव में बैठा है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में केतु शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर सातवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपको इस वर्ष अपना चाल-चलन और व्यवहार काफी संयमित रखना होगा, अन्यथा हानि की संभावना है। दूसरों से झूठा वायदा न करें। सत्य का पालन करें।

वर्षफल में केतु का उपाय

केतु के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) अपना चाल-चलन ठीक रखें।
(२) ४ केले ४ दिन बहते हुए पानी में बहायें।
(३) ४ नींबू ४ दिन तक जल में प्रवाहित करें।

वर्षफल में लागू महत्वपूर्ण योग :

आपके कुण्डली बुध तीसरे, आठवें, नवें, ग्यारहवें या बारहवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनसुसार, बृहस्पति का फल अशुभ हो जायेगा, और सरकारी कार्यों में असफलता प्राप्त होगी।

आपके वर्षफल कुण्डली में राहु नवें भाव बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपके संतान को कष्टहो सकता है। उपाय के तौर पर काले कुत्ते का पालन करें।

आपके वर्षफल कुण्डली में बुध तीसरे भाव में और राहु, केतु या मंगल छठे या सातवें भाव में स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, यह वर्ष आपके माता-पिता के लिए ठीक नहीं होगा।

लाल किताब से वर्षफल

(सभी भविष्यफल लाल किताब चन्द्र कुण्डली पर आधारित हैं)

वर्ष पूर्ण – 48

(18:12:2020 - 17:12:2021)

सूर्य नवम् भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में सूर्य ग्रह अशुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में सूर्य ग्रह के अशुभता के कारण –

आपकी वर्षफल कुण्डली (चन्द्र कुण्डली से) में, सूर्य नौवें भाव में स्थित है और चौथे भाव में कोई ग्रह स्थित है।
आपकी वर्षफल कुण्डली (चन्द्र कुण्डली से) में, सूर्य नौवें भाव में स्थित है और बुध तीसरे या पॉचवें भाव में स्थित है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में सूर्य शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर नौवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, यदि आप लाटरी, सट्टा, शेयर आदि के कारोबार से जुड़े हुए हैं, तो यह वर्ष आपकेलिए शुभ नहीं है। आपको परदेश में कष्टपूर्ण स्थितियों में रहना पड़ सकता है। अपने पिता से आपके संबंध बिगड़ सकते हैं, परिवारजनों से जमीन-जायदाद की वजह से लड़ाई-झगड़ा हो सकता है।

वर्षफल में सूर्य का उपाय

सूर्य के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) अपने घर में खाने-पीने के लिए पीतल के बर्तन का प्रयोग करें।
(२) दूध, चांदी, चावल आदि वस्तुओं का दान न लें न दें।
(३) ज़्यादा गुस्सा न करें।

चन्द्रमा दशम भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में चन्द्रमा ग्रह शुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में चंद्रमा शुभ स्थिति में दसवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, अपने विचारों को फलीभूत करने के लिए आप जरूरत से अधिक मेहनत करेंगे। नौकरी/व्यापार में आपको सफलता प्राप्त होगी। वरिष्ठ लोगों से आपके संबंध मधुर होंगे। आपके स्वभाव में चंचलता एवं बुद्धि में अस्थिरता हो सकती है।

वर्षफल में चन्द्रमा का उपाय

चन्द्रमा के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्नउपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) माता का चरणस्पर्श कर आशिर्वाद लें।
(२) रात में दूध का सेवन न करें।
(३) यदि डाक्टर हैं, तो मुफ्त में दवाई न दें।
(४) अपना चाल-चलन ठीक रखें।

मंगल षष्ठ भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में मंगल ग्रह शुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में मंगल शुभ स्थिति में छठे भाव में बैठा हुआ है। इस वर्ष आपके मित्रों की संख्या में वृद्धि हो सकती है। धार्मिक क्रिया-कलापों में आप बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेंगे। विदेशी संबंधों से आपको लाभ प्राप्त होगा। इस वर्ष आपका ईश्वर पर विश्वास भी बढ़ेगा। लिखने-पढ़ने से संबंधित

कार्यों में आपको सफलता प्राप्त होगी। पैसों के लेन-देन के कारोबार से आपको बड़ी मात्रा में धन प्राप्त होगा। आपका जीवन संतों की तरह रहेगा।

वर्षफल में मंगल का उपाय

मंगल के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) नीम का वृक्ष लगायें।
(२) रात को सिरहाने पानी रखकर सुबह किसी पेड़ की जड़ में डालें।
(३) पितरों का श्राद्ध करें।
(४) अपने घर में ६ मन अनाज हमेशा रखें।

बुध तृतीय भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में बुध ग्रह अशुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में बुध ग्रह के अशुभता के कारण -

आपकी वर्षफल कुण्डली (चन्द्र कुण्डली से) में, बुध तीसरे भाव में स्थित है और दसवें भाव में कोई अन्य ग्रह स्थित है।
आपकी वर्षफल कुण्डली (चन्द्र कुण्डली से) में, बुध तीसरे भाव में स्थित है और शुक्र चौथे भाव में स्थित है।

आपकी कुण्डली में बुध शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर तीसरे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आप ज्वर आदि से पीड़ित हो सकते हैं। आपको जुआ, सट्टा, लाटरी इत्यादि से इस वर्ष बचकर रहना चाहिए। इस वर्ष यात्रायें भी आपको अधिक फायदा नहीं पहुंचायेंगी। इस वर्ष आपको पारिवारिक कलह का सामना करना पड़ सकता है। आपकी बहन, बुआ, बेटी पर भी बुध का अशुभ असरहो सकता है। आपको जीभ से संबंधित रोग हो सकते हैं। यदि आप अपनी बहन, बुआ, या बेटी सेधन लेकर कोई व्यापार शुरू करते हैं तो उसमें आपको घाटा हो सकता है।

वर्षफल में बुध का उपाय

बुध के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) रात को हरी मूंग भिगोकर सुबह में उसे पक्षियों को खिलायें।
(२) फिटकरी से दांत साफ करें।
(३) दुर्गा पूजन करायें।
(४) ६ वर्ष से कम उम्र की कन्याओं को भोजन करायें, एवं उनका आशिर्वाद लें।
(५) दमा की दवाईयां मरीजों में मुफ्त बाटें।
(६) विधवा औरतों से संबंध न रखें।

बृहस्पति चतुर्थ भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में गुरू ग्रह शुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में बृहस्पति शुभ स्थिति में चौथे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपको अचानक ही कहीं से धन प्राप्त होगा। इस वर्ष शिक्षणेत्तर कार्यों में आपको बड़ी सफलता प्राप्त होगी। इस वर्ष नये घर या वाहन की प्राप्ति की भी संभावना प्रबल है। आयात-निर्यात से संबंधित कार्यों में आपको सफलता प्राप्त होगी।

वर्षफल में गुरू का उपाय

गुरू के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) किसी के सामने नंगे बदन न रहें।
(२) अपने घर में टूटे हुए खिलौने न रहने दें।
(३) पीपल के वृक्ष में पानी दें।
(४) गलत संगत से

बचें।
(५) अपने कुल-पुरोहित की सेवा करें।
(६) किसी भी धार्मिक स्थान में चार किलो चने की दाल दान करें।

शुक्र चतुर्थ भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में शुक्र ग्रह शुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में शुक्र शुभ स्थिति में चौथे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपकी पारिवारिक सुख-सुविधाओं में वृद्धि होगी। अपने जीवनसाथी के अतिरिक्त दूसरी औरतों से भी आपके प्रेम संबंध बन सकते हैं। आपको अपने मामा अथवा मौसी से आर्थिक सहायता प्राप्त होगी। भूमि और भवन के मामलों में भी आप भाग्यशाली सिद्ध होंगे। आपके रहन-सहन के स्तर में भी वृद्धि होगी। आपको स्त्रियॉ भायेंगी तथा सौन्दर्य-वर्धक और सुगंधित वस्तुओं के व्यापार में काफी सफलता प्राप्त होगी।

वर्षफल में शुक्र का उपाय

शुक्र के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) आड़ू के गुठली में सूरमा भरकर जमीन में दबायें।
(२) अपना चाल-चलन ठीक रखें।
(३) इस वर्ष प्रेम विवाह न करें।
(४) घर की छत पर कीचड़ का लेप करें।

शनि सप्तम भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में शनि ग्रह अशुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में शनि ग्रह के अशुभता के कारण –

आपकी वर्षफल कुण्डली (चन्द्र कुण्डली से) में, शनि सातवें भाव में स्थित है और पहले भाव में बुध स्थित है या पहला भाव खाली है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में शनि शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर सातवें भाव में बैठा हुआ है। इस वर्षजीवनसाथी की अस्वस्थता और वैचारिक मतभेदों की वजह से वैवाहिक जीवन अशांत हो सकता है। आपको अपने साझेदारों पर शक नहीं करना चाहिए, अन्यथा आपके संबंध बिगड़ सकते हैं। चिकित्सा और रसायन से संबंधित व्यापार में आपको घाटा होने की संभावना है। गुस्से की मात्रा भी इस वर्ष ज़्यादाही होगी, इसलिए सावधानी के तौर पर आपको अपने पास कोई भी हथियार वगैरह नहीं रखना चाहिए। इस वर्ष बुरे लोगों की संगत भी आपके लिए भारी पड़ सकता है।

वर्षफल में शनि का उपाय

शनि के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) मिट्टी के बर्तन में शहद भरकर विराने में दबायें।
(२) बुरे लोगों की संगत न करें।
(३) डॉक्टर और केमिस्ट की संगत से बचें।
(४) काली गाय की सेवा करें।

आपकी वर्षफल कुण्डली में राहु ग्रह अशुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में राहु ग्रह के अशुभता के कारण –

आपकी वर्षफल कुण्डली (चन्द्र कुण्डली से) में, राहु नौवें भाव में स्थित है और चौथे भाव में कोई अन्य ग्रह स्थित है।
आपकी वर्षफल कुण्डली (चन्द्र कुण्डली से) में, राहु नौवें भाव में स्थित है और पहला भाव खाली है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में राहु शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर नौवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपको इस वर्ष शत्रु परेशान करते रहेंगें। यदि आप सांस के रोगों से ग्रसित हैं तो यह वर्ष आपके लिए और भी बुरा हो सकता है। आपको इस वर्ष चोरी का कोई भी सामान नहीं खरीदना चाहिए। धार्मिक कार्यों में हिस्सा लेना आपके लिए लाभप्रद होगा।

वर्षफल में राहु का उपाय

राहु के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) आपको घर के अन्दर भट्ठी, पानी की टंकी नहीं बनवानी चाहिए।
(२) लड़ाई-झगड़ो से बचें।
(३) साधु-संतो की संगत करें।
(४) अपना चाल-चलन ठीक रखें।
(५) शरीर पर सोना धारण करें।

केतु सप्तम भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में केतु ग्रह शुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में केतु शुभ स्थिति में होकर सातवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपकी धन-संपत्ति और मान-मर्यादा में अभूतपूर्व वृद्धि होगी। पारिवारिक और मानसिक स्थिति ठीक रहेगी। आपकी संतान भी आपकी सहायता करेगी। तीर्थाटन की भी संभावना है। टेलीविजन, कम्प्यूटर इत्यादि के व्यापार में लाभ होगा। समाज में आपकी मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

वर्षफल में केतु का उपाय

केतु के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) अपना चाल-चलन ठीक रखें।
(२) ४ केले ४ दिन बहते हुए पानी में बहायें।
(३) ४ नींबू ४ दिन तक जल में प्रवाहित करें।

वर्षफल में लागू महत्वपूर्ण योग :

आपके कुण्डली बुध तीसरे, आठवें, नवें, ग्यारहवें या बारहवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनसुसार, बृहस्पति का फल अशुभ हो जायेगा, और सरकारी कार्यों में असफलता प्राप्त होगी।

आपके वर्षफल कुण्डली में राहु नवें भाव बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपके संतान को कष्टहो सकता है। उपाय के तौर पर काले कुत्ते का पालन करें।

आपके वर्षफल कुण्डली में बुध तीसरे भाव में और राहु, केतु या मंगल छठे या सातवें भाव में स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, यह वर्ष आपके माता-पिता के लिए ठीक नहीं होगा।

लाल किताब वर्षफल (चन्द्र कुण्डली)

वर्ष पूर्ण– 1
(18:12:1973 - 17:12:1974)

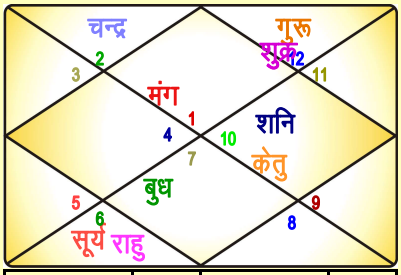

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	6	शुक्र-बद	12
चन्द्रमा-बद	2	शनि	10
मंगल	1	राहु-बद	6
बुध-बद	7	केतु	10
गुरू-बद	12		

वर्ष पूर्ण– 2
(18:12:1974 - 17:12:1975)

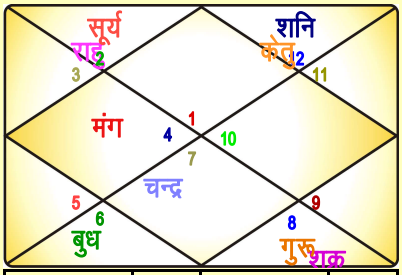

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	2	शुक्र	8
चन्द्रमा-बद	7	शनि-बद	12
मंगल-बद	4	राहु	2
बुध-बद	6	केतु-बद	12
गुरू-बद	8		

वर्ष पूर्ण– 3
(18:12:1975 - 17:12:1976)

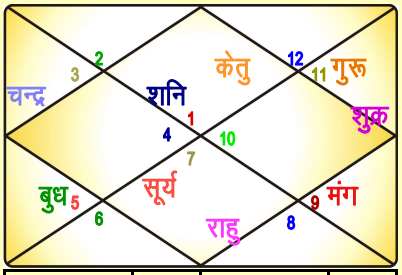

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	7	शुक्र	11
चन्द्रमा	3	शनि-बद	1
मंगल	9	राहु	7
बुध	5	केतु	1
गुरू	11		

वर्ष पूर्ण– 4
(18:12:1976 - 17:12:1977)

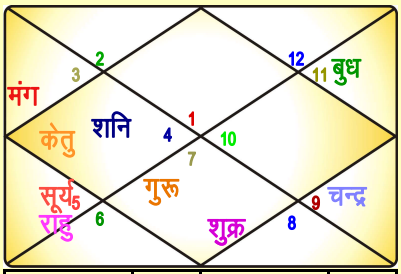

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	5	शुक्र-बद	7
चन्द्रमा-बद	9	शनि-बद	4
मंगल-बद	3	राहु	5
बुध	11	केतु-बद	4
गुरू-बद	7		

वर्ष पूर्ण– 5
(18:12:1977 - 17:12:1978)

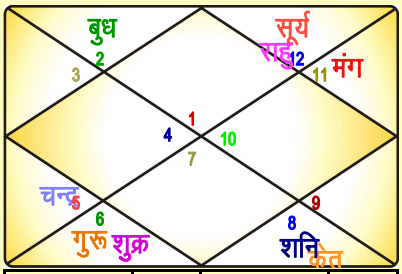

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	12	शुक्र	6
चन्द्रमा-बद	5	शनि	8
मंगल-बद	11	राहु	12
बुध	2	केतु	8
गुरू	6		

वर्ष पूर्ण– 6
(18:12:1978 - 17:12:1979)

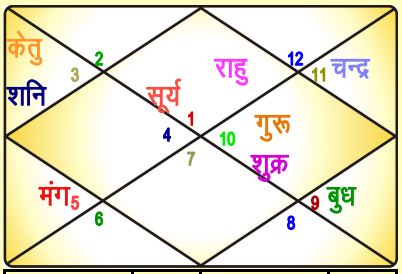

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	1	शुक्र-बद	10
चन्द्रमा	11	शनि-बद	3
मंगल	5	राहु	1
बुध	9	केतु-बद	3
गुरू-बद	10		

वर्ष पूर्ण– 7
(18:12:1979 - 17:12:1980)

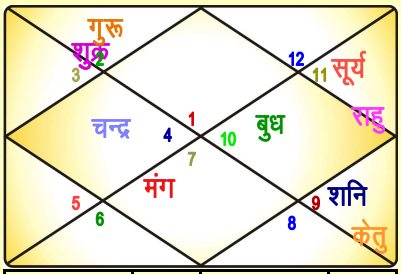

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	11	शुक्र-बद	2
चन्द्रमा-बद	4	शनि-बद	9
मंगल-बद	7	राहु	11
बुध	10	केतु-बद	9
गुरू-बद	2		

वर्ष पूर्ण– 8
(18:12:1980 - 17:12:1981)

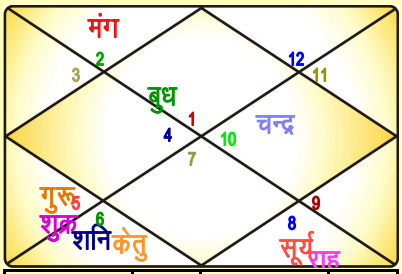

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	8	शुक्र	5
चन्द्रमा-बद	10	शनि-बद	6
मंगल	2	राहु	8
बुध-बद	1	केतु-बद	6
गुरू	5		

वर्ष पूर्ण– 9
(18:12:1981 - 17:12:1982)

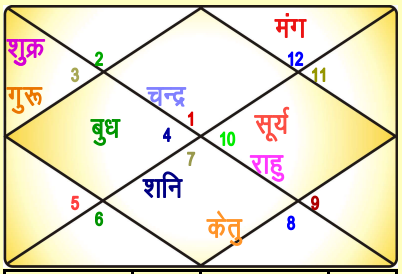

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	10	शुक्र-बद	3
चन्द्रमा	1	शनि	7
मंगल-बद	12	राहु	10
बुध	4	केतु	7
गुरू-बद	3		

लाल किताब वर्षफल (चन्द्र कुण्डली)

वर्ष पूर्ण– 82
(18:12:2054 - 17:12:2055)

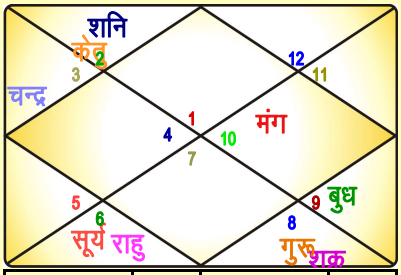

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	6	शुक्र-बद	8
चन्द्रमा-बद	3	शनि-बद	2
मंगल-बद	10	राहु	6
बुध-बद	9	केतु-बद	2
गुरू-बद	8		

वर्ष पूर्ण– 83
(18:12:2055 - 17:12:2056)

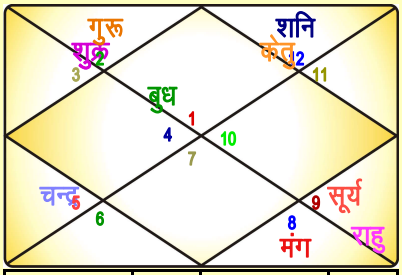

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	9	शुक्र-बद	2
चन्द्रमा-बद	5	शनि	12
मंगल-बद	8	राहु	9
बुध-बद	1	केतु-बद	12
गुरू-बद	2		

वर्ष पूर्ण– 84
(18:12:2056 - 17:12:2057)

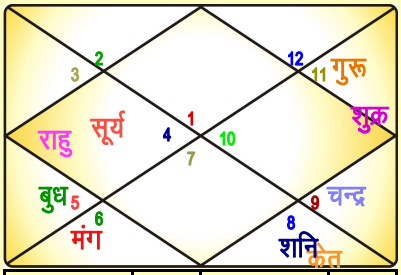

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	4	शुक्र-बद	11
चन्द्रमा-बद	9	शनि-बद	8
मंगल	6	राहु-बद	4
बुध	5	केतु	8
गुरू-बद	11		

वर्ष पूर्ण– 85
(18:12:2057 - 17:12:2058)

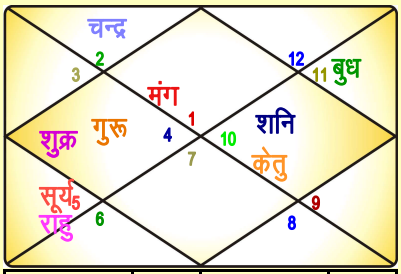

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	5	शुक्र-बद	4
चन्द्रमा-बद	2	शनि-बद	10
मंगल	1	राहु	5
बुध	11	केतु-बद	10
गुरू-बद	4		

वर्ष पूर्ण– 86
(18:12:2058 - 17:12:2059)

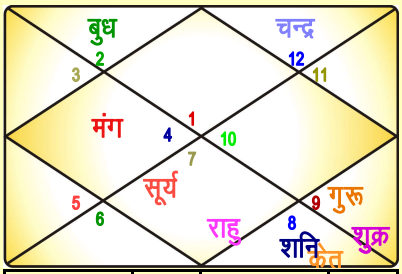

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	7	शुक्र-बद	9
चन्द्रमा-बद	12	शनि	8
मंगल	4	राहु-बद	7
बुध-बद	2	केतु	8
गुरू-बद	9		

वर्ष पूर्ण– 87
(18:12:2059 - 17:12:2060)

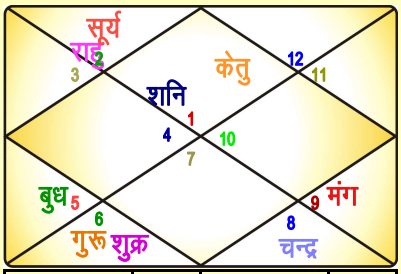

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	2	शुक्र-बद	6
चन्द्रमा	8	शनि-बद	1
मंगल	9	राहु-बद	2
बुध	5	केतु-बद	1
गुरू-बद	6		

वर्ष पूर्ण– 88
(18:12:2060 - 17:12:2061)

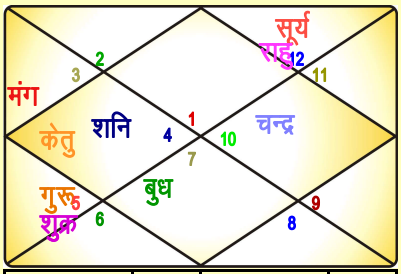

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	12	शुक्र-बद	5
चन्द्रमा-बद	10	शनि	4
मंगल-बद	3	राहु-बद	12
बुध-बद	7	केतु-बद	4
गुरू-बद	5		

वर्ष पूर्ण– 89
(18:12:2061 - 17:12:2062)

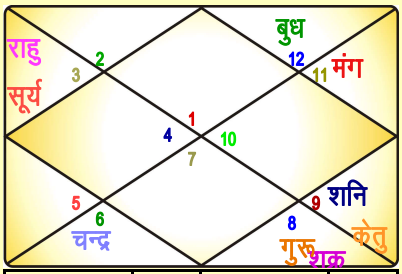

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	3	शुक्र-बद	8
चन्द्रमा-बद	6	शनि	9
मंगल-बद	11	राहु-बद	3
बुध-बद	12	केतु	9
गुरू-बद	8		

वर्ष पूर्ण– 90
(18:12:2062 - 17:12:2063)

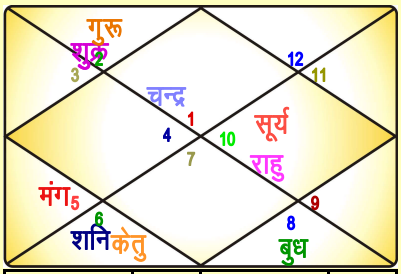

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	10	शुक्र	2
चन्द्रमा-बद	1	शनि-बद	6
मंगल	5	राहु-बद	10
बुध-बद	8	केतु-बद	6
गुरू	2		

लाल किताब वर्षफल (चन्द्र कुण्डली)

वर्ष पूर्ण– 10
(18:12:1982 - 17:12:1983)

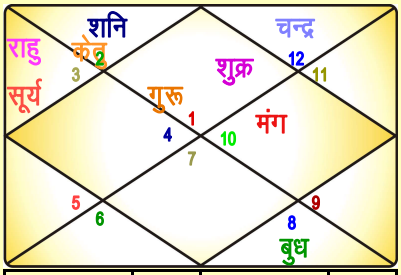

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	3	शुक्र-बद	1
चन्द्रमा	12	शनि	2
मंगल-बद	10	राहु-बद	3
बुध-बद	8	केतु	2
गुरू-बद	1		

वर्ष पूर्ण– 11
(18:12:1983 - 17:12:1984)

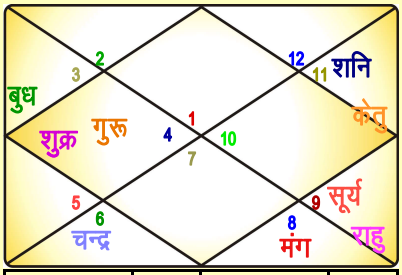

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	9	शुक्र-बद	4
चन्द्रमा	6	शनि-बद	11
मंगल-बद	8	राहु-बद	9
बुध-बद	3	केतु-बद	11
गुरू-बद	4		

वर्ष पूर्ण– 12
(18:12:1984 - 17:12:1985)

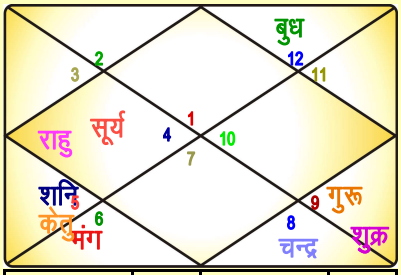

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	4	शुक्र-बद	9
चन्द्रमा	8	शनि-बद	5
मंगल-बद	6	राहु	4
बुध-बद	12	केतु-बद	5
गुरू-बद	9		

वर्ष पूर्ण– 13
(18:12:1985 - 17:12:1986)

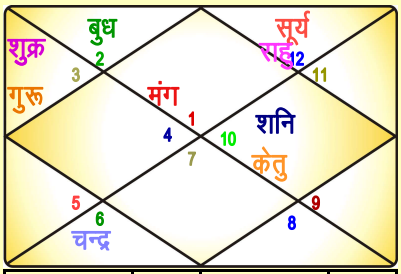

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	12	शुक्र-बद	3
चन्द्रमा-बद	6	शनि	10
मंगल	1	राहु	12
बुध-बद	2	केतु	10
गुरू-बद	3		

वर्ष पूर्ण– 14
(18:12:1986 - 17:12:1987)

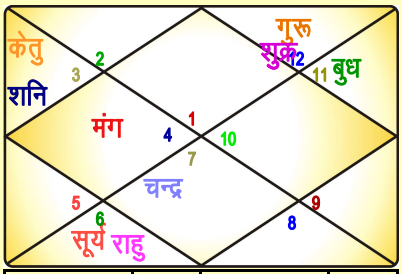

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	6	शुक्र-बद	12
चन्द्रमा	7	शनि	3
मंगल-बद	4	राहु	6
बुध-बद	11	केतु-बद	3
गुरू-बद	12		

वर्ष पूर्ण– 15
(18:12:1987 - 17:12:1988)

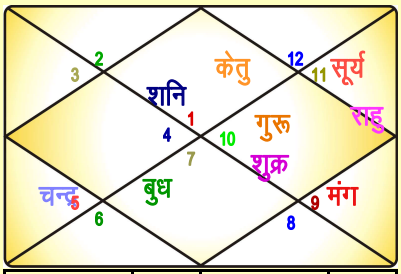

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	11	शुक्र-बद	10
चन्द्रमा-बद	5	शनि-बद	1
मंगल	9	राहु	11
बुध-बद	7	केतु	1
गुरू-बद	10		

वर्ष पूर्ण– 16
(18:12:1988 - 17:12:1989)

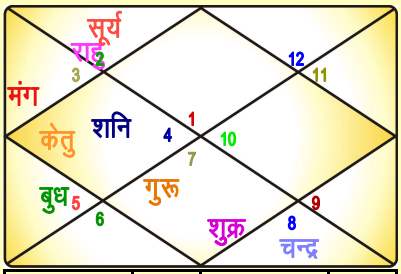

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	2	शुक्र-बद	7
चन्द्रमा-बद	8	शनि	4
मंगल-बद	3	राहु	2
बुध	5	केतु-बद	4
गुरू-बद	7		

वर्ष पूर्ण– 17
(18:12:1989 - 17:12:1990)

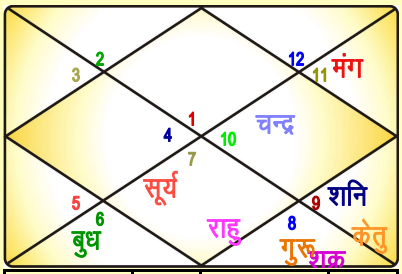

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	7	शुक्र-बद	8
चन्द्रमा-बद	10	शनि	9
मंगल-बद	11	राहु	7
बुध	6	केतु	9
गुरू-बद	8		

वर्ष पूर्ण– 18
(18:12:1990 - 17:12:1991)

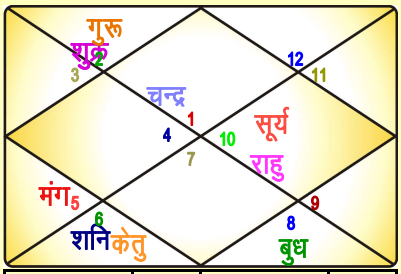

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	10	शुक्र	2
चन्द्रमा-बद	1	शनि-बद	6
मंगल	5	राहु-बद	10
बुध-बद	8	केतु-बद	6
गुरू	2		

लाल किताब वर्षफल (चन्द्र कुण्डली)

वर्ष पूर्ण– 19
(18:12:1991 - 17:12:1992)

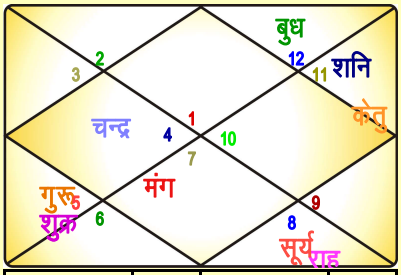

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	8	शुक्र-बद	5
चन्द्रमा-बद	4	शनि	11
मंगल	7	राहु	8
बुध-बद	12	केतु	11
गुरू-बद	5		

वर्ष पूर्ण– 20
(18:12:1992 - 17:12:1993)

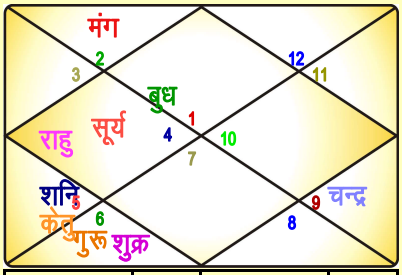

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	4	शुक्र-बद	6
चन्द्रमा-बद	9	शनि-बद	5
मंगल-बद	2	राहु	4
बुध-बद	1	केतु-बद	5
गुरू-बद	6		

वर्ष पूर्ण– 21
(18:12:1993 - 17:12:1994)

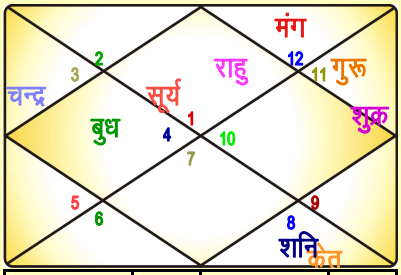

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	1	शुक्र	11
चन्द्रमा	3	शनि-बद	8
मंगल-बद	12	राहु-बद	1
बुध-बद	4	केतु-बद	8
गुरू	11		

वर्ष पूर्ण– 22
(18:12:1994 - 17:12:1995)

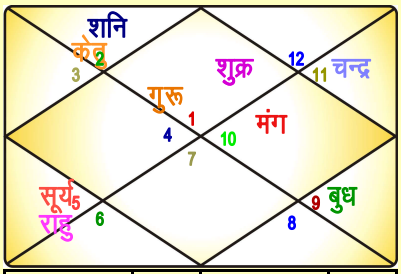

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	5	शुक्र	1
चन्द्रमा	11	शनि-बद	2
मंगल-बद	10	राहु	5
बुध	9	केतु-बद	2
गुरू	1		

वर्ष पूर्ण– 23
(18:12:1995 - 17:12:1996)

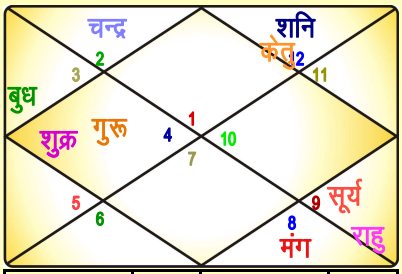

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	9	शुक्र	4
चन्द्रमा-बद	2	शनि	12
मंगल-बद	8	राहु-बद	9
बुध-बद	3	केतु-बद	12
गुरू-बद	4		

वर्ष पूर्ण– 24
(18:12:1996 - 17:12:1997)

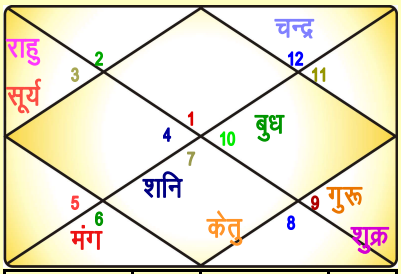

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	3	शुक्र-बद	9
चन्द्रमा-बद	12	शनि-बद	7
मंगल	6	राहु-बद	3
बुध	10	केतु	7
गुरू-बद	9		

वर्ष पूर्ण– 25
(18:12:1997 - 17:12:1998)

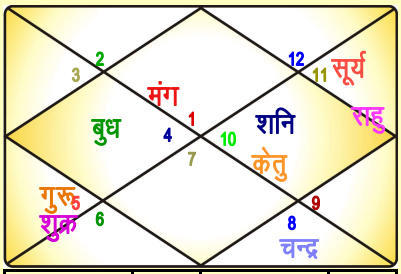

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	11	शुक्र	5
चन्द्रमा	8	शनि-बद	10
मंगल-बद	1	राहु	11
बुध-बद	4	केतु-बद	10
गुरू	5		

वर्ष पूर्ण– 26
(18:12:1998 - 17:12:1999)

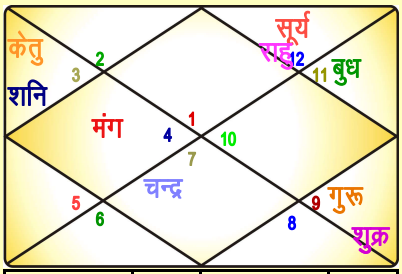

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	12	शुक्र-बद	9
चन्द्रमा	7	शनि	3
मंगल-बद	4	राहु-बद	12
बुध	11	केतु-बद	3
गुरू-बद	9		

वर्ष पूर्ण– 27
(18:12:1999 - 17:12:2000)

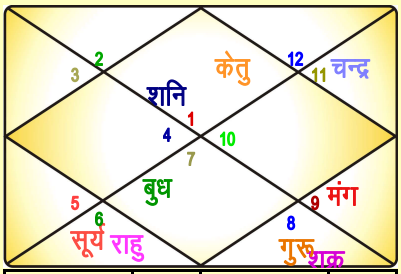

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	6	शुक्र-बद	8
चन्द्रमा-बद	11	शनि-बद	1
मंगल	9	राहु-बद	6
बुध-बद	7	केतु-बद	1
गुरू-बद	8		

लाल किताब वर्षफल (चन्द्र कुण्डली)

वर्ष पूर्ण– 28
(18:12:2000 - 17:12:2001)

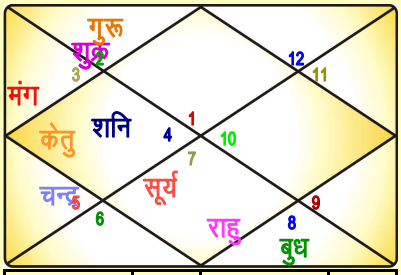

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	7	शुक्र	2
चन्द्रमा	5	शनि	4
मंगल-बद	3	राह-बद	7
बुध-बद	8	केतु-बद	4
गुरू	2		

वर्ष पूर्ण– 29
(18:12:2001 - 17:12:2002)

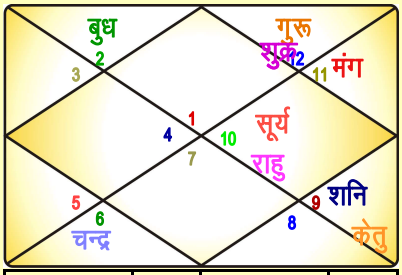

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	10	शुक्र	12
चन्द्रमा-बद	6	शनि	9
मंगल-बद	11	राह	10
बुध-बद	2	केतु	9
गुरू	12		

वर्ष पूर्ण– 30
(18:12:2002 - 17:12:2003)

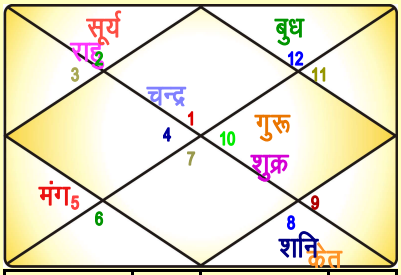

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	2	शुक्र-बद	10
चन्द्रमा-बद	1	शनि	8
मंगल-बद	5	राह	2
बुध-बद	12	केतु	8
गुरू-बद	10		

वर्ष पूर्ण– 31
(18:12:2003 - 17:12:2004)

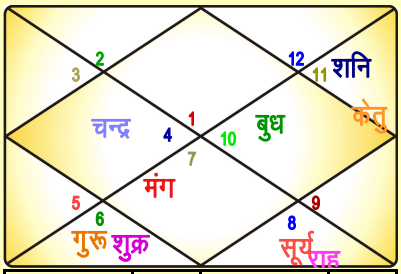

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	8	शुक्र-बद	6
चन्द्रमा-बद	4	शनि-बद	11
मंगल	7	राह	8
बुध	10	केतु-बद	11
गुरू	6		

वर्ष पूर्ण– 32
(18:12:2004 - 17:12:2005)

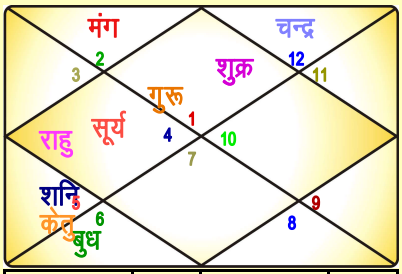

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	4	शुक्र	1
चन्द्रमा	12	शनि-बद	5
मंगल	2	राह	4
बुध-बद	6	केतु-बद	5
गुरू	1		

वर्ष पूर्ण– 33
(18:12:2005 - 17:12:2006)

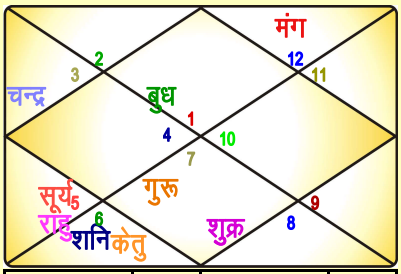

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	5	शुक्र	7
चन्द्रमा	3	शनि-बद	6
मंगल-बद	12	राह-बद	5
बुध	1	केतु-बद	6
गुरू	7		

वर्ष पूर्ण– 34
(18:12:2006 - 17:12:2007)

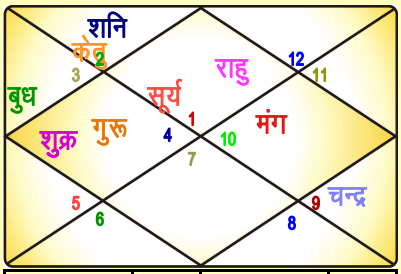

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	1	शुक्र	4
चन्द्रमा-बद	9	शनि-बद	2
मंगल-बद	10	राह	1
बुध-बद	3	केतु-बद	2
गुरू	4		

वर्ष पूर्ण– 35
(18:12:2007 - 17:12:2008)

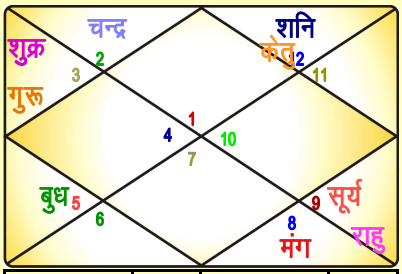

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	9	शुक्र	3
चन्द्रमा-बद	2	शनि	12
मंगल-बद	8	राह-बद	9
बुध-बद	5	केतु-बद	12
गुरू	3		

वर्ष पूर्ण– 36
(18:12:2008 - 17:12:2009)

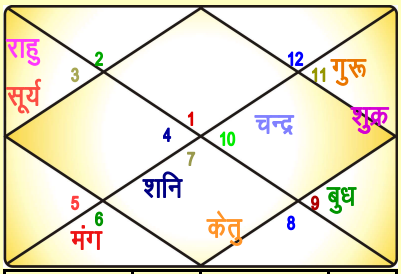

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	3	शुक्र-बद	11
चन्द्रमा	10	शनि-बद	7
मंगल	6	राह-बद	3
बुध-बद	9	केतु	7
गुरू-बद	11		

लाल किताब वर्षफल (चन्द्र कुण्डली)

वर्ष पूर्ण– 37
(18:12:2009 - 17:12:2010)

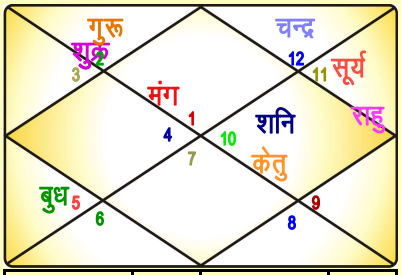

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	11	शुक्र	2
चन्द्रमा	12	शनि-बद	10
मंगल	1	राहु	11
बुध-बद	5	केतु-बद	10
गुरू-बद	2		

वर्ष पूर्ण– 38
(18:12:2010 - 17:12:2011)

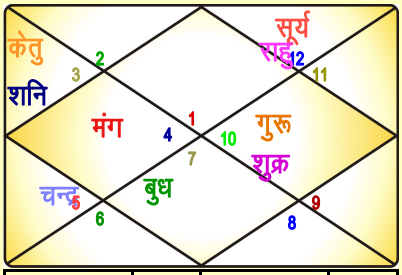

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	12	शुक्र-बद	10
चन्द्रमा-बद	5	शनि-बद	3
मंगल	4	राहु-बद	12
बुध-बद	7	केतु-बद	3
गुरू-बद	10		

वर्ष पूर्ण– 39
(18:12:2011 - 17:12:2012)

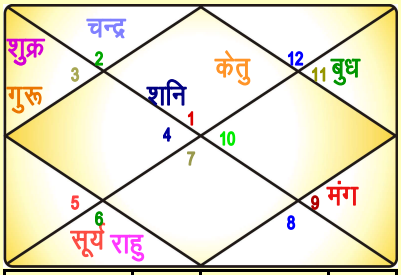

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	6	शुक्र-बद	3
चन्द्रमा-बद	2	शनि	1
मंगल	9	राहु-बद	6
बुध-बद	11	केतु	1
गुरू	3		

वर्ष पूर्ण– 40
(18:12:2012 - 17:12:2013)

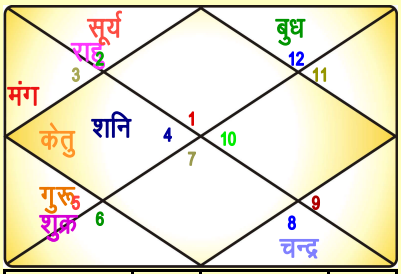

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	2	शुक्र-बद	5
चन्द्रमा-बद	8	शनि	4
मंगल	3	राहु	2
बुध-बद	12	केतु-बद	4
गुरू-बद	5		

वर्ष पूर्ण– 41
(18:12:2013 - 17:12:2014)

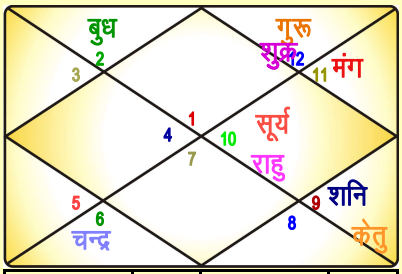

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	10	शुक्र	12
चन्द्रमा-बद	6	शनि	9
मंगल-बद	11	राहु	10
बुध-बद	2	केतु	9
गुरू	12		

वर्ष पूर्ण– 42
(18:12:2014 - 17:12:2015)

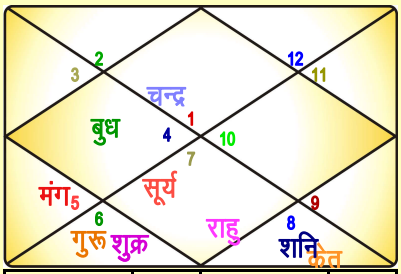

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	7	शुक्र-बद	6
चन्द्रमा-बद	1	शनि-बद	8
मंगल	5	राहु	7
बुध	4	केतु	8
गुरू-बद	6		

वर्ष पूर्ण– 43
(18:12:2015 - 17:12:2016)

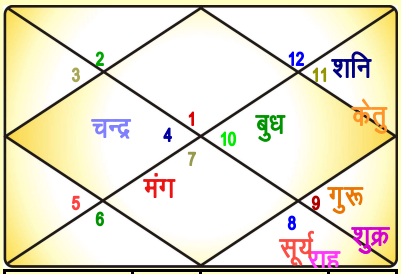

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	8	शुक्र-बद	9
चन्द्रमा-बद	4	शनि-बद	11
मंगल	7	राहु	8
बुध	10	केतु	11
गुरू-बद	9		

वर्ष पूर्ण– 44
(18:12:2016 - 17:12:2017)

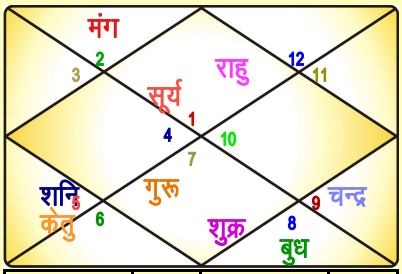

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	1	शुक्र-बद	7
चन्द्रमा	9	शनि-बद	5
मंगल-बद	2	राहु-बद	1
बुध	8	केतु-बद	5
गुरू-बद	7		

वर्ष पूर्ण– 45
(18:12:2017 - 17:12:2018)

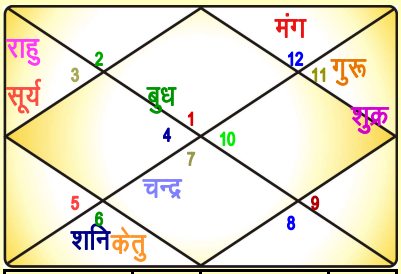

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	3	शुक्र-बद	11
चन्द्रमा	7	शनि-बद	6
मंगल-बद	12	राहु	3
बुध-बद	1	केतु-बद	6
गुरू-बद	11		

लाल किताब वर्षफल (चन्द्र कुण्डली)

वर्ष पूर्ण– 46
(18:12:2018 - 17:12:2019)

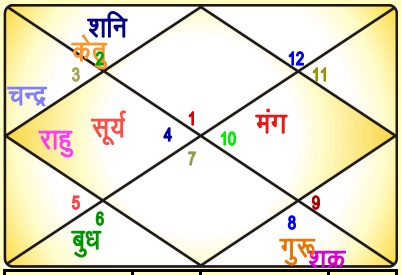

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	4	शुक्र-बद	8
चन्द्रमा-बद	3	शनि	2
मंगल-बद	10	राह-बद	4
बुध	6	केतु-बद	2
गुरू-बद	8		

वर्ष पूर्ण– 47
(18:12:2019 - 17:12:2020)

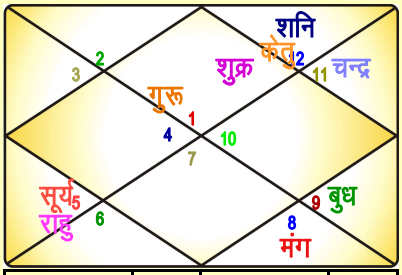

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	5	शुक्र-बद	1
चन्द्रमा	11	शनि	12
मंगल	8	राह-बद	5
बुध	9	केतु-बद	12
गुरू-बद	1		

वर्ष पूर्ण– 48
(18:12:2020 - 17:12:2021)

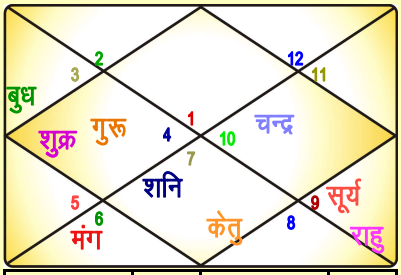

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	9	शुक्र	4
चन्द्रमा	10	शनि-बद	7
मंगल	6	राह-बद	9
बुध-बद	3	केतु	7
गुरू	4		

वर्ष पूर्ण– 49
(18:12:2021 - 17:12:2022)

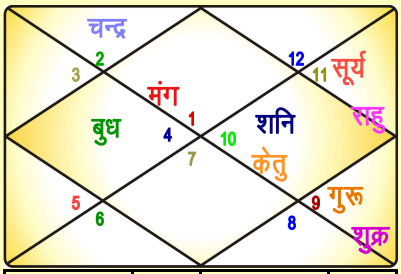

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	11	शुक्र-बद	9
चन्द्रमा-बद	2	शनि	10
मंगल	1	राह	11
बुध-बद	4	केतु	10
गुरू-बद	9		

वर्ष पूर्ण– 50
(18:12:2022 - 17:12:2023)

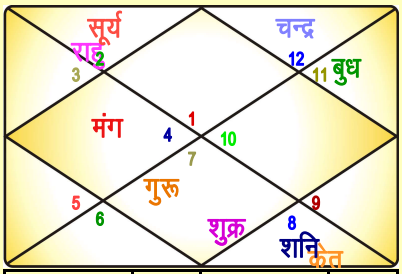

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	2	शुक्र-बद	7
चन्द्रमा-बद	12	शनि	8
मंगल-बद	4	राह	2
बुध	11	केतु	8
गुरू-बद	7		

वर्ष पूर्ण– 51
(18:12:2023 - 17:12:2024)

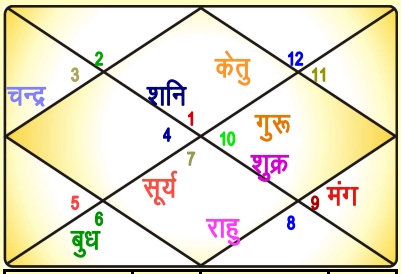

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	7	शुक्र	10
चन्द्रमा-बद	3	शनि-बद	1
मंगल	9	राह	7
बुध-बद	6	केतु	1
गुरू-बद	10		

वर्ष पूर्ण– 52
(18:12:2024 - 17:12:2025)

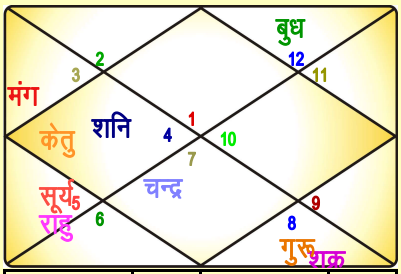

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	5	शुक्र-बद	8
चन्द्रमा	7	शनि	4
मंगल-बद	3	राह-बद	5
बुध-बद	12	केतु-बद	4
गुरू-बद	8		

वर्ष पूर्ण– 53
(18:12:2025 - 17:12:2026)

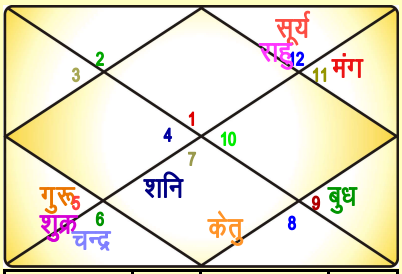

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	12	शुक्र-बद	5
चन्द्रमा	6	शनि-बद	7
मंगल-बद	11	राह-बद	12
बुध-बद	9	केतु	7
गुरू-बद	5		

वर्ष पूर्ण– 54
(18:12:2026 - 17:12:2027)

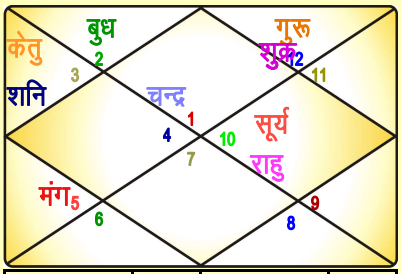

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	10	शुक्र	12
चन्द्रमा	1	शनि-बद	3
मंगल-बद	5	राह-बद	10
बुध-बद	2	केतु-बद	3
गुरू	12		

लाल किताब वर्षफल (चन्द्र कुण्डली)

वर्ष पूर्ण– 55
(18:12:2027 - 17:12:2028)

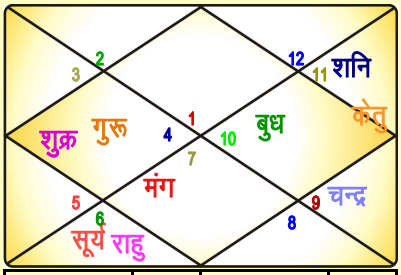

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	6	शुक्र-बद	4
चन्द्रमा-बद	9	शनि-बद	11
मंगल	7	राहु	6
बुध	10	केतु-बद	11
गुरू-बद	4		

वर्ष पूर्ण– 56
(18:12:2028 - 17:12:2029)

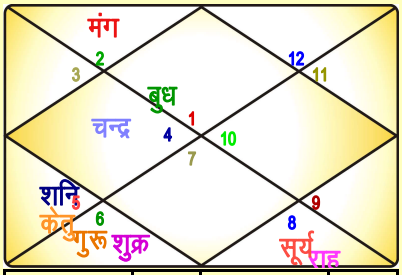

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	8	शुक्र-बद	6
चन्द्रमा	4	शनि-बद	5
मंगल	2	राहु	8
बुध-बद	1	केतु-बद	5
गुरू-बद	6		

वर्ष पूर्ण– 57
(18:12:2029 - 17:12:2030)

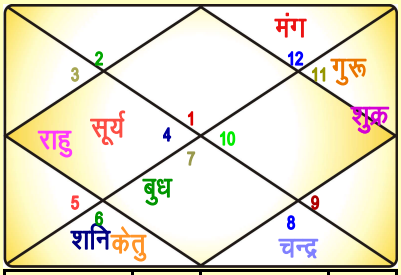

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	4	शुक्र-बद	11
चन्द्रमा	8	शनि	6
मंगल-बद	12	राहु-बद	4
बुध-बद	7	केतु	6
गुरू-बद	11		

वर्ष पूर्ण– 58
(18:12:2030 - 17:12:2031)

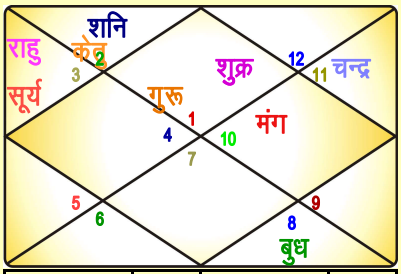

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	3	शुक्र-बद	1
चन्द्रमा	11	शनि	2
मंगल-बद	10	राहु-बद	3
बुध-बद	8	केतु	2
गुरू-बद	1		

वर्ष पूर्ण– 59
(18:12:2031 - 17:12:2032)

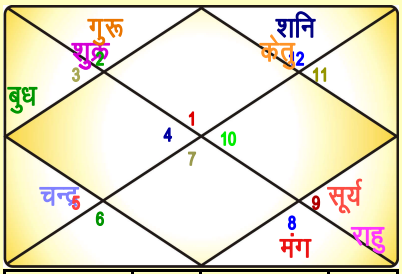

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	9	शुक्र-बद	2
चन्द्रमा-बद	5	शनि	12
मंगल-बद	8	राहु-बद	9
बुध	3	केतु-बद	12
गुरू-बद	2		

वर्ष पूर्ण– 60
(18:12:2032 - 17:12:2033)

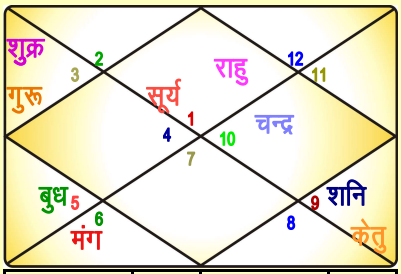

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	1	शुक्र-बद	3
चन्द्रमा-बद	10	शनि	9
मंगल-बद	6	राहु	1
बुध	5	केतु	9
गुरू-बद	3		

वर्ष पूर्ण– 61
(18:12:2033 - 17:12:2034)

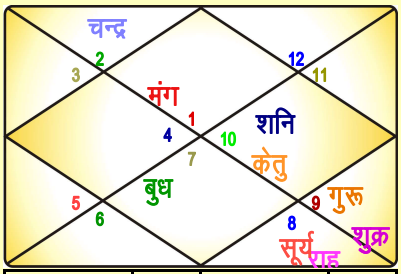

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	8	शुक्र	9
चन्द्रमा-बद	2	शनि	10
मंगल-बद	1	राहु	8
बुध-बद	7	केतु	10
गुरू	9		

वर्ष पूर्ण– 62
(18:12:2034 - 17:12:2035)

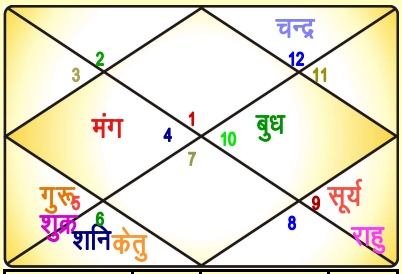

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	9	शुक्र-बद	5
चन्द्रमा	12	शनि	6
मंगल	4	राहु-बद	9
बुध-बद	10	केतु	6
गुरू-बद	5		

वर्ष पूर्ण– 63
(18:12:2035 - 17:12:2036)

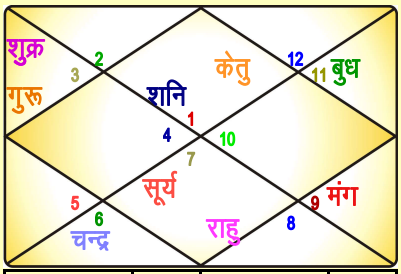

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	7	शुक्र-बद	3
चन्द्रमा-बद	6	शनि-बद	1
मंगल	9	राहु	7
बुध-बद	11	केतु	1
गुरू	3		

लाल किताब वर्षफल (चन्द्र कुण्डली)

वर्ष पूर्ण– 64
(18:12:2036 - 17:12:2037)

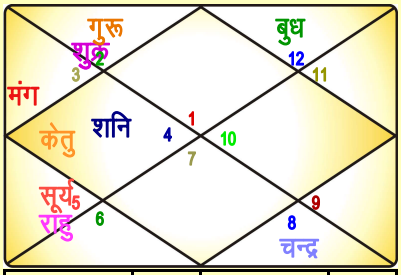

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	5	शुक्र	2
चन्द्रमा-बद	8	शनि	4
मंगल	3	राह-बद	5
बुध	12	केतु-बद	4
गुरू	2		

वर्ष पूर्ण– 65
(18:12:2037 - 17:12:2038)

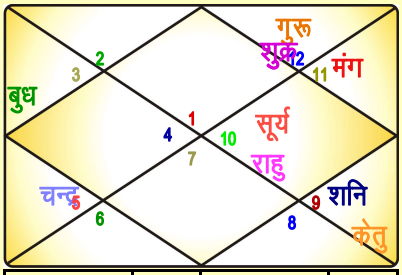

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	10	शुक्र-बद	12
चन्द्रमा-बद	5	शनि	9
मंगल	11	राह-बद	10
बुध-बद	3	केतु	9
गुरू	12		

वर्ष पूर्ण– 66
(18:12:2038 - 17:12:2039)

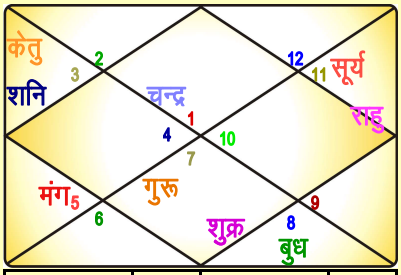

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	11	शुक्र-बद	7
चन्द्रमा-बद	1	शनि	3
मंगल	5	राह	11
बुध-बद	8	केतु	3
गुरू	7		

वर्ष पूर्ण– 67
(18:12:2039 - 17:12:2040)

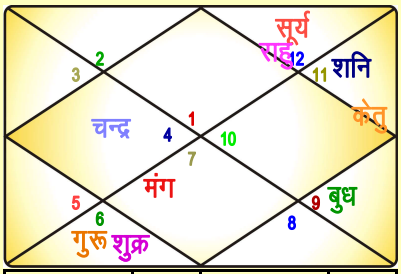

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	12	शुक्र-बद	6
चन्द्रमा-बद	4	शनि-बद	11
मंगल	7	राह-बद	12
बुध-बद	9	केतु-बद	11
गुरू	6		

वर्ष पूर्ण– 68
(18:12:2040 - 17:12:2041)

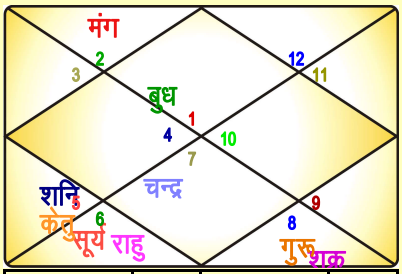

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	6	शुक्र	8
चन्द्रमा-बद	7	शनि-बद	5
मंगल	2	राह-बद	6
बुध-बद	1	केतु-बद	5
गुरू-बद	8		

वर्ष पूर्ण– 69
(18:12:2041 - 17:12:2042)

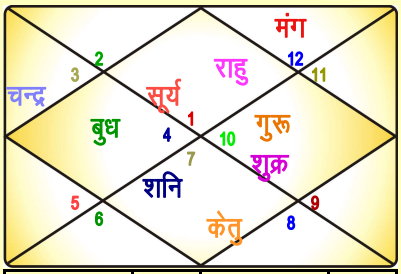

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	1	शुक्र	10
चन्द्रमा-बद	3	शनि	7
मंगल-बद	12	राह	1
बुध	4	केतु	7
गुरू-बद	10		

वर्ष पूर्ण– 70
(18:12:2042 - 17:12:2043)

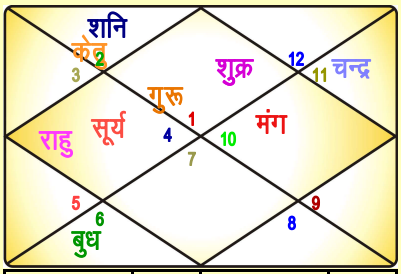

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	4	शुक्र	1
चन्द्रमा-बद	11	शनि	2
मंगल-बद	10	राह-बद	4
बुध-बद	6	केतु	2
गुरू	1		

वर्ष पूर्ण– 71
(18:12:2043 - 17:12:2044)

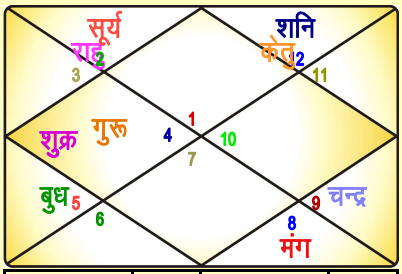

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	2	शुक्र	4
चन्द्रमा-बद	9	शनि	12
मंगल-बद	8	राह-बद	2
बुध-बद	5	केतु-बद	12
गुरू-बद	4		

वर्ष पूर्ण– 72
(18:12:2044 - 17:12:2045)

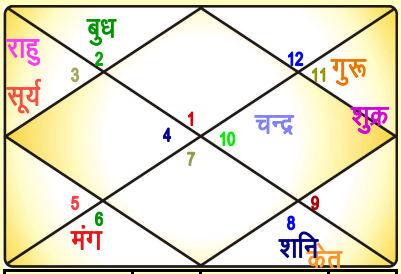

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	3	शुक्र-बद	11
चन्द्रमा	10	शनि-बद	8
मंगल	6	राह-बद	3
बुध	2	केतु-बद	8
गुरू-बद	11		

लाल किताब वर्षफल (चन्द्र कुण्डली)

वर्ष पूर्ण– 73
(18:12:2045 - 17:12:2046)

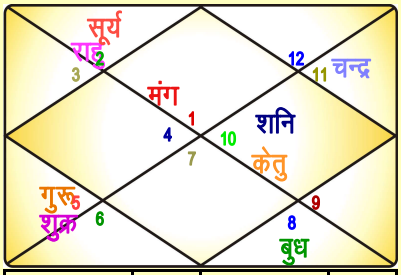

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	2	शुक्र-बद	5
चन्द्रमा	11	शनि-बद	10
मंगल-बद	1	राहु	2
बुध	8	केतु-बद	10
गुरू	5		

वर्ष पूर्ण– 74
(18:12:2046 - 17:12:2047)

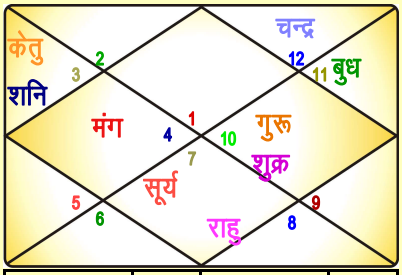

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	7	शुक्र	10
चन्द्रमा-बद	12	शनि-बद	3
मंगल-बद	4	राहु	7
बुध	11	केतु-बद	3
गुरू	10		

वर्ष पूर्ण– 75
(18:12:2047 - 17:12:2048)

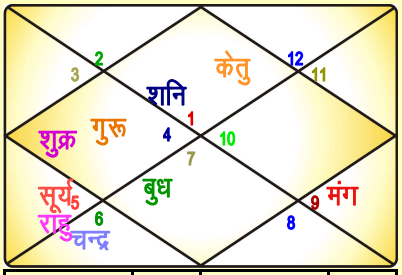

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	5	शुक्र	4
चन्द्रमा-बद	6	शनि-बद	1
मंगल-बद	9	राहु	5
बुध-बद	7	केतु	1
गुरू-बद	4		

वर्ष पूर्ण– 76
(18:12:2048 - 17:12:2049)

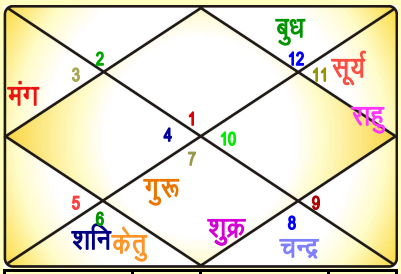

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	11	शुक्र-बद	7
चन्द्रमा-बद	8	शनि	6
मंगल-बद	3	राहु-बद	11
बुध-बद	12	केतु	6
गुरू-बद	7		

वर्ष पूर्ण– 77
(18:12:2049 - 17:12:2050)

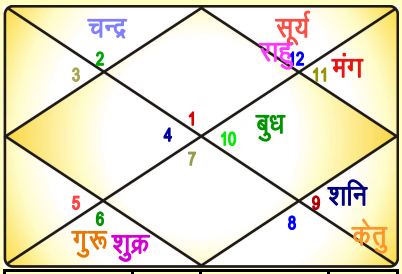

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	12	शुक्र	6
चन्द्रमा-बद	2	शनि	9
मंगल-बद	11	राहु	12
बुध	10	केतु	9
गुरू	6		

वर्ष पूर्ण– 78
(18:12:2050 - 17:12:2051)

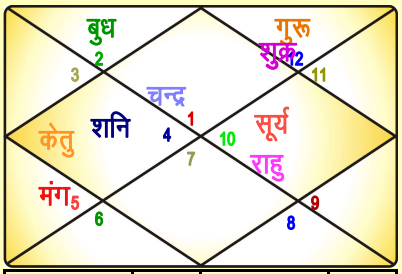

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	10	शुक्र	12
चन्द्रमा	1	शनि-बद	4
मंगल-बद	5	राहु-बद	10
बुध-बद	2	केतु	4
गुरू	12		

वर्ष पूर्ण– 79
(18:12:2051 - 17:12:2052)

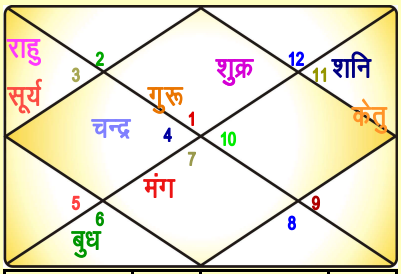

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	3	शुक्र	1
चन्द्रमा-बद	4	शनि-बद	11
मंगल	7	राहु	3
बुध-बद	6	केतु-बद	11
गुरू	1		

वर्ष पूर्ण– 80
(18:12:2052 - 17:12:2053)

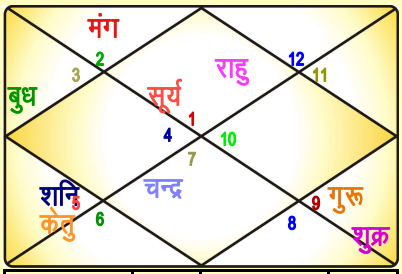

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	1	शुक्र-बद	9
चन्द्रमा-बद	7	शनि-बद	5
मंगल-बद	2	राहु	1
बुध	3	केतु-बद	5
गुरू	9		

वर्ष पूर्ण– 81
(18:12:2053 - 17:12:2054)

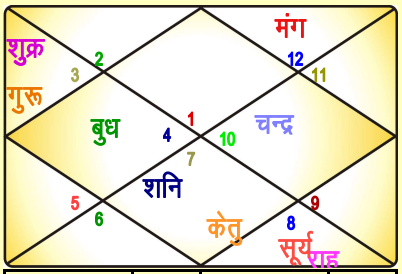

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	8	शुक्र-बद	3
चन्द्रमा	10	शनि-बद	7
मंगल-बद	12	राहु-बद	8
बुध	4	केतु	7
गुरू-बद	3		

लाल किताब वर्षफल (चन्द्र कुण्डली)

वर्ष पूर्ण– 91
(18:12:2063 - 17:12:2064)

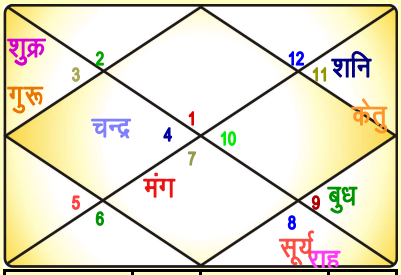

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	8	शुक्र	3
चन्द्रमा-बद	4	शनि	11
मंगल	7	राह-बद	8
बुध-बद	9	केतु	11
गुरू	3		

वर्ष पूर्ण– 92
(18:12:2064 - 17:12:2065)

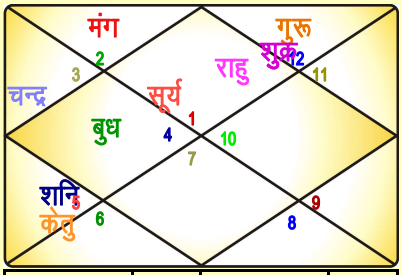

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	1	शुक्र	12
चन्द्रमा	3	शनि-बद	5
मंगल	2	राह	1
बुध	4	केतु-बद	5
गुरू	12		

वर्ष पूर्ण– 93
(18:12:2065 - 17:12:2066)

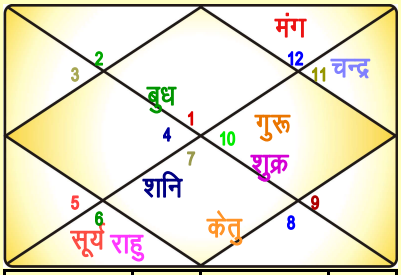

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	6	शुक्र	10
चन्द्रमा-बद	11	शनि-बद	7
मंगल-बद	12	राह-बद	6
बुध	1	केतु	7
गुरू-बद	10		

वर्ष पूर्ण– 94
(18:12:2066 - 17:12:2067)

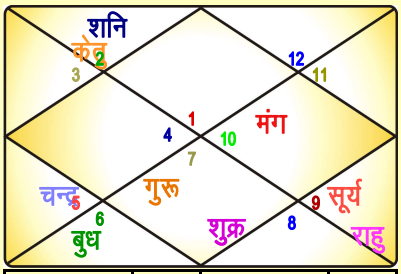

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	9	शुक्र-बद	7
चन्द्रमा-बद	5	शनि-बद	2
मंगल-बद	10	राह-बद	9
बुध	6	केतु-बद	2
गुरू-बद	7		

वर्ष पूर्ण– 95
(18:12:2067 - 17:12:2068)

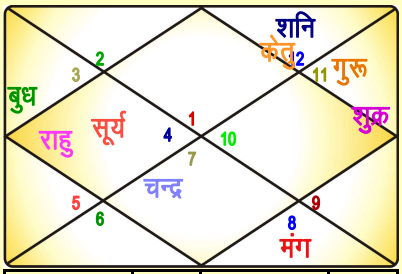

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	4	शुक्र-बद	11
चन्द्रमा	7	शनि-बद	12
मंगल-बद	8	राह-बद	4
बुध	3	केतु-बद	12
गुरू	11		

वर्ष पूर्ण– 96
(18:12:2068 - 17:12:2069)

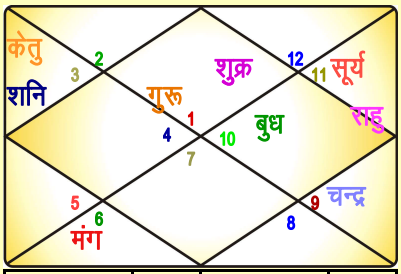

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	11	शुक्र	1
चन्द्रमा	9	शनि-बद	3
मंगल-बद	6	राह-बद	11
बुध	10	केतु-बद	3
गुरू	1		

वर्ष पूर्ण– 97
(18:12:2069 - 17:12:2070)

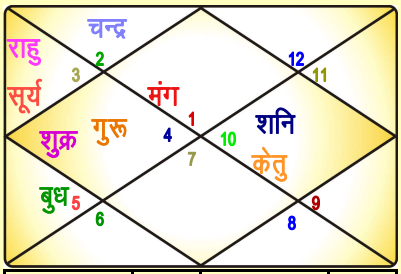

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	3	शुक्र	4
चन्द्रमा-बद	2	शनि-बद	10
मंगल	1	राह-बद	3
बुध	5	केतु-बद	10
गुरू-बद	4		

वर्ष पूर्ण– 98
(18:12:2070 - 17:12:2071)

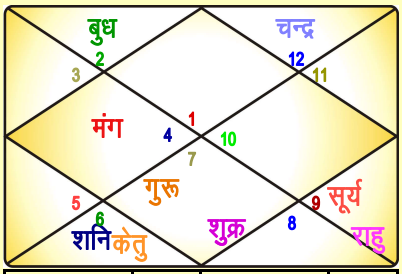

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	9	शुक्र-बद	7
चन्द्रमा-बद	12	शनि	6
मंगल	4	राह-बद	9
बुध-बद	2	केतु	6
गुरू-बद	7		

वर्ष पूर्ण– 99
(18:12:2071 - 17:12:2072)

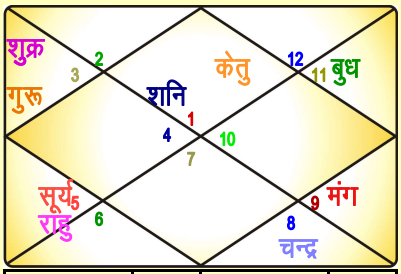

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	5	शुक्र-बद	3
चन्द्रमा-बद	8	शनि-बद	1
मंगल	9	राह	5
बुध	11	केतु-बद	1
गुरू	3		

लाल किताब वर्षफल (चन्द्र कुण्डली)

वर्ष पूर्ण– 100
(18:12:2072 - 17:12:2073)

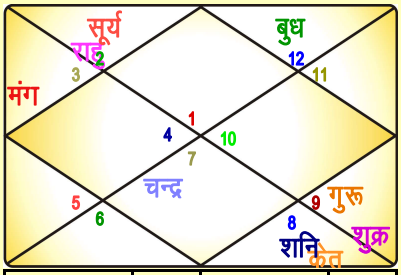

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	2	शुक्र-बद	9
चन्द्रमा-बद	7	शनि-बद	8
मंगल-बद	3	राह-बद	2
बुध-बद	12	केतु-बद	8
गुरू-बद	9		

वर्ष पूर्ण– 101
(18:12:2073 - 17:12:2074)

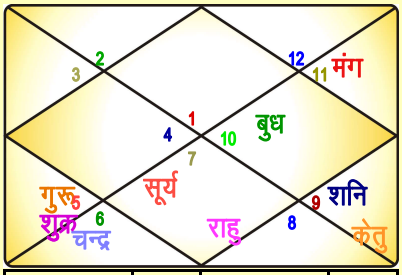

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	7	शुक्र-बद	5
चन्द्रमा	6	शनि	9
मंगल-बद	11	राह	7
बुध-बद	10	केतु	9
गुरू	5		

वर्ष पूर्ण– 102
(18:12:2074 - 17:12:2075)

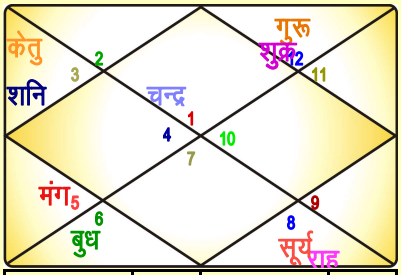

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	8	शुक्र-बद	12
चन्द्रमा-बद	1	शनि	3
मंगल-बद	5	राह-बद	8
बुध-बद	6	केतु	3
गुरू	12		

वर्ष पूर्ण– 103
(18:12:2075 - 17:12:2076)

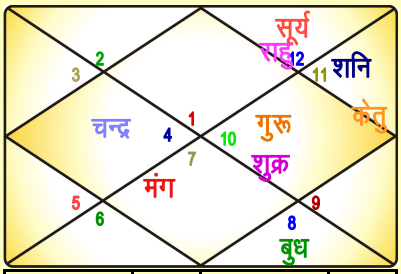

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	12	शुक्र	10
चन्द्रमा-बद	4	शनि	11
मंगल-बद	7	राह-बद	12
बुध	8	केतु	11
गुरू-बद	10		

वर्ष पूर्ण– 104
(18:12:2076 - 17:12:2077)

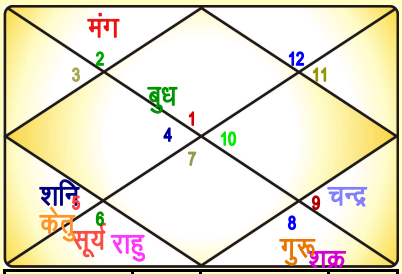

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	6	शुक्र	8
चन्द्रमा	9	शनि-बद	5
मंगल-बद	2	राह-बद	6
बुध-बद	1	केतु-बद	5
गुरू-बद	8		

वर्ष पूर्ण– 105
(18:12:2077 - 17:12:2078)

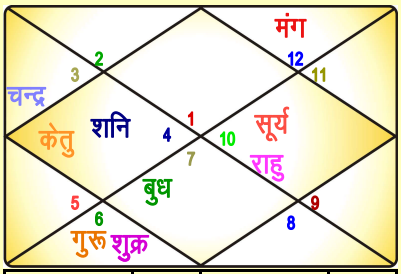

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	10	शुक्र-बद	6
चन्द्रमा-बद	3	शनि-बद	4
मंगल-बद	12	राह	10
बुध-बद	7	केतु-बद	4
गुरू	6		

वर्ष पूर्ण– 106
(18:12:2078 - 17:12:2079)

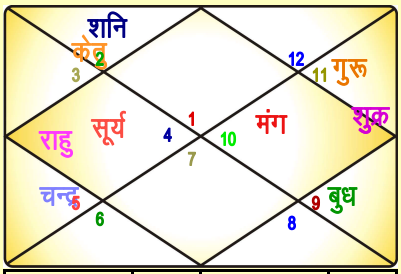

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	4	शुक्र	11
चन्द्रमा-बद	5	शनि-बद	2
मंगल-बद	10	राह-बद	4
बुध-बद	9	केतु-बद	2
गुरू	11		

वर्ष पूर्ण– 107
(18:12:2079 - 17:12:2080)

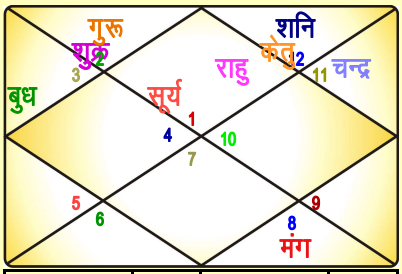

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	1	शुक्र	2
चन्द्रमा	11	शनि	12
मंगल-बद	8	राह-बद	1
बुध	3	केतु-बद	12
गुरू	2		

वर्ष पूर्ण– 108
(18:12:2080 - 17:12:2081)

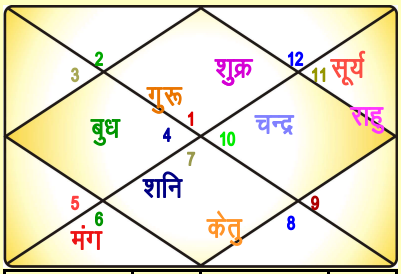

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	11	शुक्र	1
चन्द्रमा	10	शनि	7
मंगल-बद	6	राह-बद	11
बुध-बद	4	केतु	7
गुरू	1		

लाल किताब वर्षफल (चन्द्र कुण्डली)

वर्ष पूर्ण– 109
(18:12:2081 - 17:12:2082)

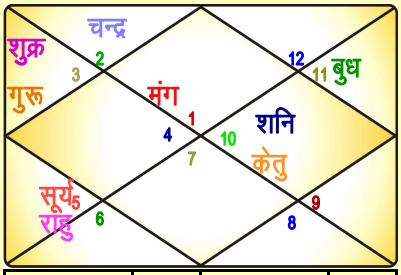

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	5	शुक्र-बद	3
चन्द्रमा-बद	2	शनि-बद	10
मंगल	1	राहु	5
बुध	11	केतु-बद	10
गुरू-बद	3		

वर्ष पूर्ण– 110
(18:12:2082 - 17:12:2083)

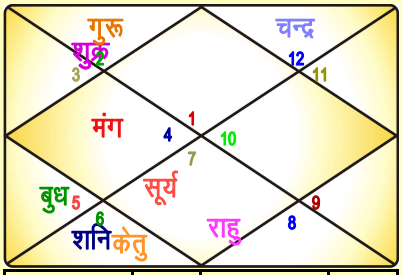

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	7	शुक्र	2
चन्द्रमा-बद	12	शनि	6
मंगल	4	राहु-बद	7
बुध-बद	5	केतु	6
गुरू-बद	2		

वर्ष पूर्ण– 111
(18:12:2083 - 17:12:2084)

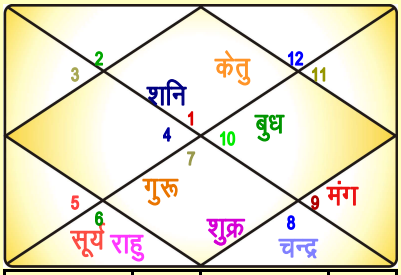

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	6	शुक्र	7
चन्द्रमा	8	शनि-बद	1
मंगल	9	राहु-बद	6
बुध	10	केतु-बद	1
गुरू	7		

वर्ष पूर्ण– 112
(18:12:2084 - 17:12:2085)

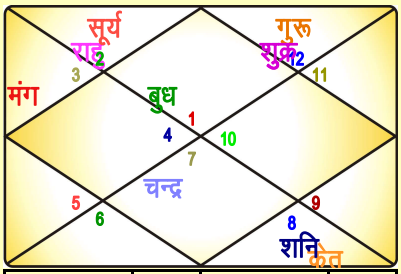

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	2	शुक्र-बद	12
चन्द्रमा-बद	7	शनि-बद	8
मंगल-बद	3	राहु	2
बुध-बद	1	केतु-बद	8
गुरू-बद	12		

वर्ष पूर्ण– 113
(18:12:2085 - 17:12:2086)

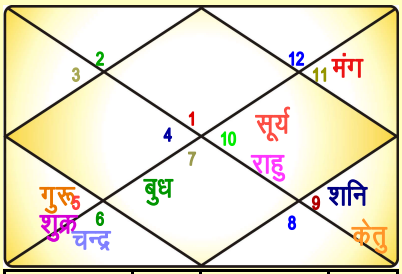

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	10	शुक्र-बद	5
चन्द्रमा	6	शनि	9
मंगल-बद	11	राहु-बद	10
बुध-बद	7	केतु	9
गुरू	5		

वर्ष पूर्ण– 114
(18:12:2086 - 17:12:2087)

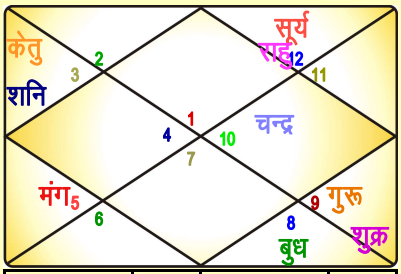

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	12	शुक्र-बद	9
चन्द्रमा-बद	10	शनि-बद	3
मंगल-बद	5	राहु	12
बुध-बद	8	केतु-बद	3
गुरू-बद	9		

वर्ष पूर्ण– 115
(18:12:2087 - 17:12:2088)

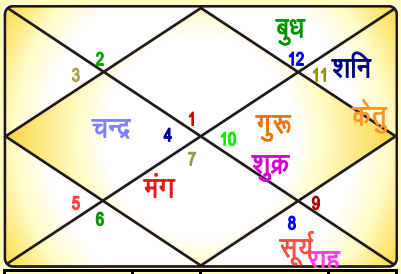

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	8	शुक्र	10
चन्द्रमा-बद	4	शनि	11
मंगल	7	राहु	8
बुध-बद	12	केतु	11
गुरू-बद	10		

वर्ष पूर्ण– 116
(18:12:2088 - 17:12:2089)

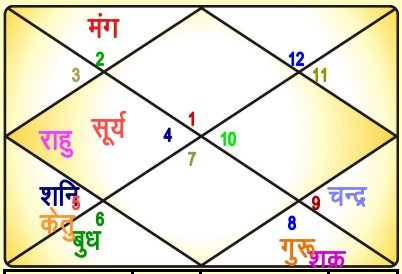

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	4	शुक्र	8
चन्द्रमा-बद	9	शनि-बद	5
मंगल-बद	2	राहु	4
बुध	6	केतु-बद	5
गुरू-बद	8		

वर्ष पूर्ण– 117
(18:12:2089 - 17:12:2090)

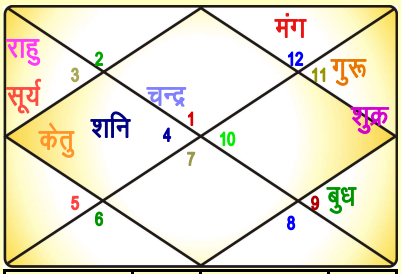

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	3	शुक्र	11
चन्द्रमा-बद	1	शनि-बद	4
मंगल-बद	12	राहु	3
बुध-बद	9	केतु-बद	4
गुरू-बद	11		

लाल किताब वर्षफल (चन्द्र कुण्डली)

वर्ष पूर्ण– 118
(18:12:2090 - 17:12:2091)

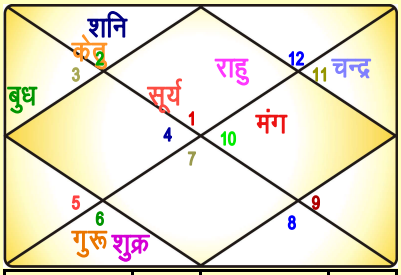

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	1	शुक्र-बद	6
चन्द्रमा-बद	11	शनि	2
मंगल-बद	10	राहु	1
बुध-बद	3	केतु	2
गुरू-बद	6		

वर्ष पूर्ण– 119
(18:12:2091 - 17:12:2092)

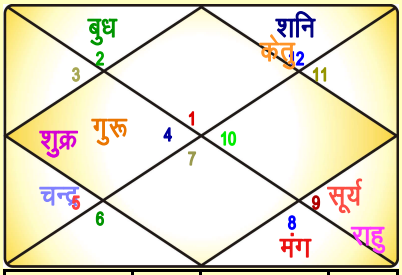

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	9	शुक्र	4
चन्द्रमा-बद	5	शनि	12
मंगल-बद	8	राहु-बद	9
बुध-बद	2	केतु-बद	12
गुरू-बद	4		

वर्ष पूर्ण– 120
(18:12:2092 - 17:12:2093)

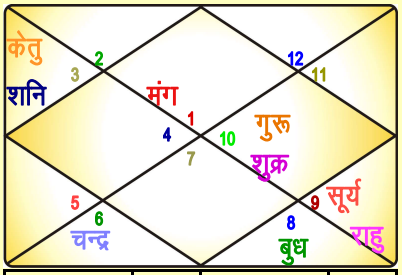

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	9	शुक्र	10
चन्द्रमा-बद	6	शनि-बद	3
मंगल-बद	1	राहु	9
बुध-बद	8	केतु-बद	3
गुरू	10		

लाल किताब में ऋण – लक्षण और उपाय

पितृ ऋण

कुण्डली में शुक्र दूसरे, पाँचवें, नवें या बारहवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, यह कुण्डली में पितृ ऋण को दर्शाता है। आपको लाल किताब में बताये हुए उपायों का पालन करना चाहिए।

ऋण – कारण और लक्षण –

1– यदि कुल पुरोहित बदलने की आवश्यकता होती है।

2– यदि घर के आस–पास का कोई धार्मिक स्थल नष्ट कर दिया गया हो।

3– घर के आस–पास में कोई पीपल या बरगद का पेड़ नष्ट कर दिया गया हो।

प्रभाव –

लाल किताब के अनुसार, आपके बाल में जब सफेदी आने लगती है, तो घर की धन–संपत्ति अपने आप नष्ट होनी शुरू हो जाती है तथा सिर पर चोटी के स्थान से बाल गायब हो जाते हैं और गले में माला या कंठी पहनना शुरू कर सकते हैं। आपके बारे में गलत अफवाहें उड़नी शुरू हो जाती है। आपको बिना गलती के ही जेल जाना पड़ सकता है।

उपाय –

1– आप अपने परिवार के सारे सदस्यों से बराबर–बराबर पैसा इकट्ठा करें और किसी धार्मिक स्थान में दान करें।

2– अपने घर के आस–पास के किसी धार्मिक स्थल पर जाकर वहां की साफ–सफाई करें।

3– घर के आस–पास कोई पीपल या बरगद का पेड़ हो तो उसकी सेवा तथा देख–भाल करें और उसमें पानी डालें।

स्वयं का ऋण

कुण्डली में शुक्र पाँचवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, यह कुण्डली में स्व ऋण को दर्शाता है।आपको लाल किताब में बताये हुए उपायों का पालन करना चाहिए।

ऋण – कारण और लक्षण –

1– आप धर्म, संस्कृति, भगवान या रीति–रिवजों को नहीं मानते हों, इसलिए आपकी कुण्डली में यह ऋण लागू हो रहा है।

2– आपके घर में तंदूर या भट्ठी हो सकती है।

3– आपके छत में किसी सूराख से रोशनी आ रही होगी।

4– हृदय रोग के लक्षण होंगे।

प्रभाव –

आप अपने जीवन में उन्नति करेंगे और धन इकट्ठा करेंगे। आप समाज में बहुत सम्मानित भी हो सकते हैं,परन्तु जब आपका पुत्र ग्यारह महीने या ग्यारह साल का होता है, तो आपके सम्मान और धन पर ग्रहण लग सकता है। आपके स्वास्थ्य पर भी बुरा असर पड़ सकता है। यहां तक कि आप अपना शरीर भी नहीं हिला सकते हैं।

उपाय –

आप अपने परिवार के सारे सदस्यों से बारबर मात्रा में धन इक्टठा करें और उस धन से सूर्य यज्ञ करवायें।

लाल किताब उपाय से संबंधित सावधानियां और सामान्य नियम

1– एक दिन में केवल एक ही उपाय करें। एक उपाय समाप्त हो जाने के बाद अगले दिन से दूसरा उपायशुरू करें।

2– सभी उपाय सूर्योदय के बाद एवं सूर्यास्त से पहले करें। जो उपाय सूर्यास्त के बाद करने के लिए लिखा गया है, केवल उसे ही सूर्यास्त के बाद करें।

3– सबसे पहले छोटे उपाय, जो एक दिन के होते हैं, उन्हें करना चाहिए। यदि आपकी कुण्डली में कोई ऋण है तो पहले ऋण वाले उपाय करें।

4– कुछ उपाय सप्ताह, मास या 43 दिन लगातार करने होते हैं, इन उपायों को बाद में शुरू करें। ध्यान रखें कि ऐसे उपाय बीच में न टूटें, अन्यथा शुभ फल प्राप्त नहीं होंगे।

5– यदि लंबे उपाय करते समय किसी कारण से उपाय बीच में बंद करना पड़े तो उस दिन उपाय करने के बाद थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांधकर अपने पास रख लें और जब दुबारा उपाय शुरू करना हो तो वह चावल धर्म स्थान में दे दें या बहते पानी में प्रवाहित कर दें। उसके बाद उपाय शुरूकर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल प्राप्त होगा।

6– मासिक धर्म के दौरान महिलायें मंदिर जाने वाले उपाय न करें, इस दौरान अपने खून से संबंधित परिवार के किसी सदस्य से उपाय करवायें।

7– एक दिन वाले उपाय चौथ, नवमी एवं चतुर्दशी को कर सकते हैं, लेकिन लंबे चलने वाले उपाय इन तिथियों को शुरू न करें।

8– जल प्रवाह की कोई भी वस्तु सिर पर सात बार घुमाकर जल प्रवाह करें।

9– यदि कोई उपाय जिंदगी भर के लिए करना है तो पहले उसे शुरू कर साथ––साथ एक––एक करकेदूसरे उपाय करें।

10– जिस उपाय को किसी खास दिन शुरू करने के लिए न कहा गया हो, उस उपाय को करने के लिए किसी दिन या तिथि जैसे अमावस्या, पूर्णिया आदि का विचार न करें।

11– जिस चीज/औजार से उपाय करें या जो भी सामान उपाय के लिए ले जायें, उसे वहीं छोड़ दें। लंबेचलने वाले उपाय में औजार आखिरी दिन छोड़ें।

12– जो चीज जल प्रवाह करें या धर्म स्थान में दें, उस दिन उस चीज का सेवन न करें।

13– उपाय के दिनों में शारीरिक संबंध स्थापित न करें।

आपकी कुण्डली से संबंधित सावधानियां और नियम

(1) आपकी कुण्डली में बुध तीसरे, आठवें, नौवें या बारहवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपको अपने घर में चौड़े पत्तों वाले पौधे जैसे मनी प्लांट इत्यादि नहीं लगाना चाहिए, अन्यथा आपके स्वास्थ्य पर इसका बुरा प्रभाव पड़ेगा।

(2) आपकी कुण्डली में मंगल आठवें भाव में बैठा हुआ है। यदि आपके घर की दहलीज पर खुदी हुई भट्ठी (जो कि शादी विवाह के अवसरों पर बनाई जाती है और बाद में ढक दी जाती है) है, तो यह आपकेपरिवार के लिए बहुत ही अशुभ है। आपको चाहिए कि उस भट्ठी की जली हुई मिट्टी को नदी या नाले में बहा दें, और ऐसी भट्ठी अपनी दहलीज पर फिर ना खोदें।

Sample DOB-18:12:1973 TOB-01:45:00 POB-Ballia (up)

बुध की नाली/स्वभाव, शनि स्वभाव (चन्द्र कुण्डली)

लग्न कुण्डली

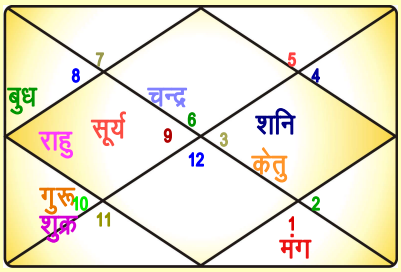

चन्द्र कुण्डली

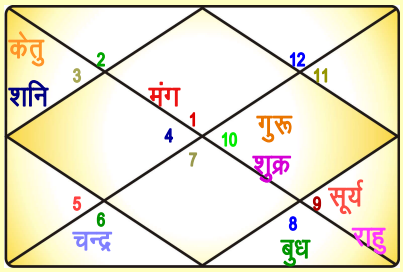

भाव चलित कुण्डली

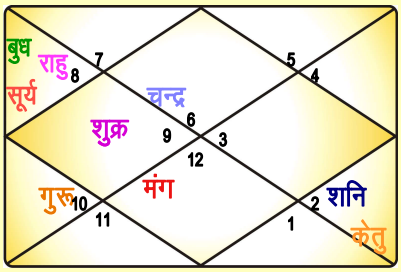

बुध की नाली

कुण्डली में बुध अपना प्रभाव शुक्र में मिला रहा है।

कुण्डली में बुध का स्वभाव

ग्रह	भावस्थ	गुणक	प्राप्तांक
सूर्य	9	9	81
चन्द्रमा	6	8	48
मंगल	1	5	5
बुध	8	4	32
गुरू	10	6	60
शुक्र	10	7	70
शनि	3	3	9
राहु	9	2	18
केतु	3	1	3
		योग –	326

बुध का स्वभाव/प्रभाव पता लगाने के लिए सारे ग्रहों का योग करने पर 326 प्राप्त हुआ, और उस योग को 9 से भाग करने पर 2 शेष प्राप्त हुआ।

पर्यवेक्षण – 2/9 (राहु)

कुण्डली में शनि का स्वभाव

कुण्डली में शनि नेक स्वभाव का है।